idara
हालाते
जहन्नम
मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

हालाते जहन्नम
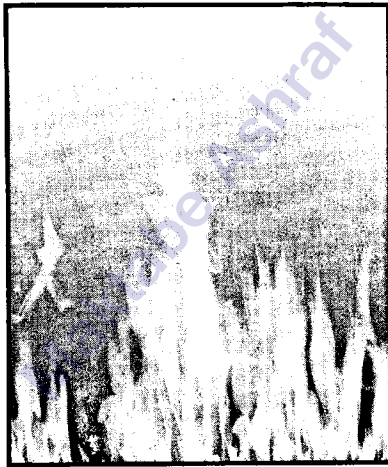
मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

www.idaraimpex.com

हालाते जहन्नम

Haalat-e-Jahannam

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रकाशन : 2012

ISBN: 81-7101-479-8

TP-142-12

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT

P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

हालाते जहन्नम

अपनी बात

بسم الله الرحمن الرحيم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم، نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० नहमदुहू व नुसल्ली अ़ला
रसूलिहिल करीम० अम्मा बअ़्दः—

इस किताब में नाचीज़ ने जहन्नम के हालात क़ुरआन की आयतों और नबी करीम की हदीसों से लेकर उर्दू (और अब हिंदी) में क़लमबंद किये हैं। लिखने की वजह यह है कि मुसलमानों की ज़ुबान पर यों तो दोज़ख़ का ज़िक्र आता ही रहता है, मगर इससे बचने और महफ़ूज़ रहने के कामों और हरकतों से इसलिए ग़ाफ़िल हैं कि इसके दिल हिला देने वाले अ़ज़ाब और उन मुसीबतों से बेख़बर हैं जो दोज़ख़ियों पर गुज़रेंगी।

मुझे यक़ीन है कि जो मुसलमान इस किताब को ध्यान से पढ़ेंगे और क़ुरआन की आयतों और नबी करीम की हदीसों को सच्चा जानते हुए दोज़ख़ का मुराक़बा (अवलोकन) करेंगे, वे आसानी से गुनाहों से बच सकेंगे और फिर उनका नफ़्स नेकियों के करने में ज़्यादा रोक भी न बनेगा। ख़ुदा करे दीन की दूसरी किताबों के तरह यह किताब भी मुसलमानों को दीनदार बनने में मदद दे और उनमें ज़्यादा से ज़्यादा मक़बूल हो। (आमीन)

पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि अपनी नेक दुआओं में इस नाचीज़ को न भुलें।

—मुहम्मद आ़शिक़ इलाही बुलंदशहरी

अ़फ़ीअ़न्हु

हालाते जहन्नम

इस किताब के दो हिस्से हैं---

(1) 'दोज़ख़ के हालात' (2) 'दोज़ख़ियों के हालात'

पहले दोज़ख के हालात लिखता हूँ फिर दोज़ियों के हालात लिखे जाएंगे।

والله الموفق وهو يهدى السبيل

वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़ु व हु व यह्दिस्सबील

(1) दोज़ख़ के हालात

दोज़ख़ की गहराई

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री ﷺ रसूले ख़ुदा ﷺ से रिवायत करते हैं कि आपने ﷺ(दोज़ख़ की गहराई ब्यान करते हुए) फ़रमाया -- अगर एक पत्थर जहन्नम में डाला जाए तो जहन्नम की तह में पहुंचने से पहले सत्तर साल तक गिरता चला जाएगा।

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ का ब्यान है कि हम रसूले ख़ुदा ﷺ की बरकती ख़िदमत में बैटे हुए थे कि हमने किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनी। रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि यह (आवाज़) क्या है? हमने अ़र्ज़ किया- अल्लाह और उसके रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आप ﷺ ने

फ़रमाया यह एक पत्थर है जिसको खुदा ने जहन्नम के मुंह पर (तह में गिरने के लिए) छोड़ा था और वह सत्तर साल तक गिरते-गिरते अब दोज़ख़ की तह में पहुंचा है। यह उसके गिरने की आवाज़ है। —मुस्लिम

दोज़ख़ की दीवारें

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ को चार दीवारें घेरे हुए हैं : जिनमें हर दीवार की चौड़ाई चालीस साल की दूरी रखती है।

यानी दोज़ख़ की दीवारें इतनी मोटी हैं कि सिर्फ़ एक दीवार की चौड़ाई तय करने के लिए चालीस साल ख़र्च हों।

दोज़ख़ के दरवाज़े

क़ुरआन शरीफ़ में दोज़ख़ के दरवाज़ों के बारे में फ़रमाया :

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ۝ (حجر ١٤)

व इन्न न जहन्न न म लमौइदुहुम अजमईन। लहा सब्अ़तु अब्वाब। लिकुल्लि बाबिम मिन्हुम जुज़्उम मक़सूम।

'और उन सबसे जहन्नम का वादा है जिसके सात दरवाज़ें हैं। हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं।' (सूरः हिज्र, पारः 14)

रसूले ख़ुदा ﷺ ने कहा कि दोज़ख़ के सात दरवाज़े हैं, जिनमें से एक उसके लिए हैं जो मेरी उम्मत पर तलवार उठाये। —मिश्कात

दोज़ख़ की आग और अंधेरा

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ को एक हज़ार साल तक धोंका गया तो उसकी आग लाल हो गई; फिर एक हज़ार साल तक धोंका गया जो उसकी आग सफ़ेद हो गई; फिर एक हज़ार साल तक धोंका गया

तो उसकी आग काली हो गई; चुनांचे दोज़ख़ अब काली अंधेरे वाली है।
—तिर्मिज़ी

एक रिवायत में है कि वह अंधेरी रात की तरह काली है और दूसरी रिवायत में है कि उसकी लपट से उसकी रौशनी नहीं होती। —तर्ग़ीब

यानी हमेशा अंधेरा ही रहता है।

बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, तुम्हारी यह आग (जिसको तुम जलाते हो) दोज़ख़ की आग का सत्तरवां हिस्सा है। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया- (जलाने को तो) यही बहुत है। आप ﷺ ने फ़रमाया (हां इसके बावजूद) दुनिया की आगों से दोज़ख़ की आग गर्मी में 69 दर्जा बढ़ी है और एक रिवायत में है कि दोज़ख़ी अगर दुनिया में जाएं तो उनको नींद आ जाए। —तर्ग़ीब

क्योंकि दोज़ख़ की आग के मुक़ाबले में दुनिया की आग बहुज ही ज़्यादा ठंढी है। इसलिए उसमें उनको दोज़ख़ के मुक़ाबले आराम मालूम होगा।

दोज़ख़ के अ़ज़ाब का अंदाज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, दोज़ख़ियों में सबसे हल्का अ़ज़ाब उस शख़्स पर होगा, जिसकी दोनों जूतियां और तस्मे आग के होंगे; जिनकी वजह से ज़्यादा लज़्ज़त और ऐश में रहता था, पकड़कर एक बार दोज़ख़ में ग़ोता दिया जाएगा फिर उससे पूछा जाएगा : ऐ इब्ने आदम! (आदम की औलाद) क्या तूने कभी नेमत देखी है? क्या कभी तुझे आराम नसीब हुआ है? इसपर वह कहेगा, ख़ुदा की क़सम! ऐ रब नहीं! (मैंने कभी आराम नहीं पाया) फिर फ़रमाया कि क़ियामत के दिन एक ऐसे जन्नती को जो दुनिया में तमाम इंसानों से ज़्यादा मुसीबत में रहा था, उसे पकड़कर जन्नत में ग़ोता दिया जायेगा फिर उससे पूछा जाएगा, ऐ इब्ने आदम! कभी तूने मुसीबत देखी है? क्या कभी तुझपर सख़्ती गुज़री है? वह कहेगा, ख़ुदा क़सम, ऐ रब! मुझपर कभी सख़्ती नहीं गुज़री और मैंने कभी मुसीबत नहीं देखी।

दोज़ख़ की सांस

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया — जब बड़ी गर्मी हो तो ज़ुह्र की नमाज़ देर से पढ़ा करो क्योंकि गर्मी की सख़्ती दोज़ख़ की तेज़ी की वजह से होती है। (फिर फ़रमाया कि) दोज़ख़ ने अपने रब के दरबार में शिकायत की कि (मेरी तेज़ी बहुत बढ़ गयी है, यहां तक कि) मेरे कुछ हिस्से दुसरे हिस्से को खाये जाते हैं (इसलिए मुझे इजाज़त दी जाए कि किसी तरह गर्मी हल्की करू) चुनांचे अल्लाह तआला ने उसको दो बार सांस लेने की इजाज़त दी। एक सांस सर्दी के मौसम में और एक गर्मी के मौसम में। इसलिए गर्मी जो तुम महसूस करते हो; दोज़ख़ की लू का असर है (जो सांस के साथ बाहर आती है) और सख़्त सर्दी जो महसूस करते हो, दोज़ख़ के ठंढे हिस्से का असर है। —बुख़ारी शरीफ़

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि दोपहर को हर दिन दोज़ख़ दहकाया जाता है।

फ़ायदा : दोज़ख़ के सांस लेने से गर्मी बढ़ जाना तो समझ में आता है, लेकिन सर्दी का बढ़ना में समझ में नहीं आता। सच बात तो यह है कि गर्मी में दोज़ख़ सांस बाहर फेंकती है और इस तरह दुनिया में गर्मी बढ़ जाती है और सर्दी में सांस अंदर लेती है और इस तरह दुनिया की तमाम गर्मी खींच लेती है, इस वजह से सर्दी बढ़ जाती है।

कुछ उलमा ने इसकी यह तशरीह[1] की है कि दोज़ख़ में जलाने ही का अज़ाब नहीं है, बल्कि ठंढक का अज़ाब भी है। उम्मते मुहम्मदी ﷺ के मशहूर अहले कश्फ़ बुज़ुर्ग[2] हज़रत अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ रह० का ब्यान है कि जिन्नात को आग का अज़ाब नहीं दिया जाएगा, क्योंकि आग उनकी

---

1. व्याख्या

2. ऐसे बुज़ुर्ग जो कश्फ़ व करामात वाले हों (ग़ैर मामूली तरीक़े से कुछ ऐसी बातें जान लेना जो आम इंसान न समझ सके, उसे कश्फ़ कहते हैं।)

तबीअ़त है, बल्कि उनको बेहद ठंढक का अ़ज़ाब दिया जाएगा। जिन्नात दुनिया में भी सर्दी से बेहद डरते हैं और सर्द हवा से जंगली गधों की तरह बदहवास होकर भागते हैं। फ़रमाते थे कि पानी में न शैतान दाख़िल हो सकता है, न कोई जिन्न जा सकता है। अगर कोई उनको पानी में डाल दे तो बुझकर फ़िना हो जाएंगे। यह भी फ़रमाते हैं कि क़ातिलों को शैतान के साथ ठंढक का अ़ज़ाब दिया जाएगा। यहां पहुंचकर ज़रा सबक़ हासिल करने वाली आँख खोलिए कि इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी को इंसान नहीं बर्दाश्त कर सकता जो दोज़ख़ की सांस से पैदा होती है फिर भला दोज़ख़ की असली गर्मी और सर्दी कैसे बर्दाश्त करेगा। *फ़अ़्तबिरू या उलिल अब्सार।* कितने अफ़सोस की जगह है कि करोड़ों इंसान ऐसे हैं जो इस दुनिया की मामूली सर्दी और गर्मी से बचने का एहतमाम करते हैं मगर दोज़ख़ से बचने का उनको कुछ ध्यान नहीं।

दोज़ख़ का ईंधन

क़ुरआन हकीम में अल्लाह फ़रमाते हैं :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ . (تحريم)

या ऐयुहल्लज़ी न आमनू क़ू अन्फ़ु सकुम व अहलीकुम नारौं वक़ूदुहन्नासु वल्हिजारः *—सूरः तहरीम*

'ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं।'

फ़ायदा : पत्थर से क्या मुराद है? इसके मुताबिक़ हज़रते इब्ने मस्ऊद का इर्शाद है कि पत्थर जो दोज़ख़ का ईंधन हैं, वह किब्रीत (यानी गंधक) के पत्थर हैं जो ख़ुदा ने क़रीब वाले आसमान में उसी दिन पैदा फ़रमाये थे। फिर फ़रमाया : ये पत्थर कुफ़्फ़ार (के अ़ज़ाब)

के लिए तैयार फ़रमाये हैं। —हाकिम

इन पत्थरों के अलावा मुश्रिकों की वे मूर्तियां भी दोज़ख़ में होंगीं जिनकी वह पूजा किया करते थे। चुनांचे सूरः अंबिया में है :

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ط اَنْتُمْ لَهَا وَارِدُوْنَ ۝

इन्नकुम वमा तअ्बुदू न मिन दूनिल्लाहि ह स बु जहन्नम। अन्तुम लहा वारिदून।

'ऐ मुश्रिको! बेशक तुम और तुम्हारे वे माबूद, जिनकी ख़ुदा के सिवा पूजा करते हो, सब दोज़ख़ में झोंके जाओगे और तुम सब उसमें दाख़िल होगे।'

दोज़ख़ के तब्क़े

पहले गुज़र चुका है :

لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ط لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ط

लहा सब्अ़तु अब्वाब। लिकुल्लि बाबिम मिन्हुम जुज़्उम मक़सूम।

इस आयत की तफ़सीर में मुअल्लिफ़ ब्यानुल क़ुरआन क़ुद्दुस सिर्रहू लिखते हैं कि कुछ लोगों ने कहा है- सात तब्क़े मुराद हैं, जिनमें तरह-तरह के अ़ज़ाब हैं। जो जिस अ़ज़ाब का हक़दार होगा उसी तब्क़े में दाख़िल होगा, चूंकि हर तब्क़े का दरवाज़ा अलग-अलग है, इसलिए 'सात दरवाजों' के नाम से याद किया। और कुछ लोगों ने कहा है कि सात दरवाज़े ही मुराद हैं और मक़सद यह ब्यान करना है कि दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों की ज़्यादती की वजह से एक दरवाज़ा काफ़ी न होगा, इसलिए सात दरवाज़े बनाये गये हैं।

अ़ल्लामा इब्ने कसीर कुद्दुस सिर्रहू ने हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्ह : का इर्शाद नक़ल किया है आपने *'सब्अ़तु अब्वाबिन'* (सात दरवाजों) के

मुतअ़ल्लक़ हाथों से इशारा करके फ़रमाया कि दोज़ख़ के दरवाज़े इस तरह हैं यानी ऊपर नीचे। इस इर्शाद से भी यही मालूम होता है कि नीचे-ऊपर जहन्नम के सात तब्क़े हैं और हर तब्क़े का अलग-अलग दरवाज़ा है। और क़ुरआन हकीम की आयत :

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ (نساء)

इन्नल मुनाफ़िक़ी न फ़िद्दर्किल अस्फ़लि मिन्नार।

'बिला शुब्हा मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे नीचे के तब्क़े में जायेंगे' --- से भी यही बात मालूम होती है कि जहन्नम के कई तब्क़े हैं। बुज़ुर्गों ने इन तब्क़ों के नाम और इन तब्क़े वालों की तफ़सील इस तरह बताई है कि सबसे नीचे का तब्क़ा - मुनाफ़िक़ों, फ़िरऔन और उसके मददगार का है, जिसका नाम 'हाविय:' है और दूसरा तब्क़ा जो हाविय: के ऊपर है, मुश्रिकों के लिए है जिसका नाम 'जहीम' है। फिर जहीम के ऊपर तीसरा तब्क़ा 'सक़र' जो बे-दीन फ़िर्क़ा 'साइबीन' के लिए है। चौथा तब्क़ा जो सक़र से ऊपर है 'नतय' है, वह इब्लीस और उसके ताबेदारों के लिए है, उसी पर पुलसिरात क़ायम होगी और गो सब तब्क़ों के लिए 'जहन्नम' आता है लेकिन असल में इसी तब्क़े का नाम जहन्नम है। यह भी लिखा है कि जहन्नम के तब्क़ों के हर दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक सात सौ वर्ष की दूरी है।

दोज़ख़ की एक ख़ास गरदन

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया क़ियामत के दिन दोज़ख़ से एक गरदन निकलेगी जिसकी दो आंखें होंगी और दो कान होंगे जिनसे सुनती होगी और एक ज़ुबान होगी जिससे बोलती होगी। वह कहेगी मैं तीन शख़्सों पर मुसल्लत की गई हूँ– (1) हर सरकश ज़िद्दी पर, (2) हर उस शख़्स पर जिसने अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद ठहराया और (3) तस्वीर बनाने वाले पर।

—तिर्मिज़ी

आग के सुतूनों में बन्द कर दिए जाएंगे

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ○ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْئِدَةِ ○ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ
فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ

नारुल्लाहिल मू क़ दतुल्लती तत्तलिउ अ़लल अफ़्इदः। इन्नहा अ़लैहिम मु'स दतुन फ़ी अ़ म दिम मुमद्ददः।

'(हुतमः) सुलगायी हुई अल्लाह की वह आग है जो दिलों तक जा पहुंचेगी। वह आग उन पर लम्बे-लम्बे सुतूनों में बन्द कर दी जायेगी।'

दुनिया में किसी को आग लगाती है तो दिल तक पहुंचने से पहले ही उसकी रूह निकल जाती है, लेकिन दोज़ख़ में चूंकि मौत ही न आयेगी इसलिए सारे बदन के साथ दिलों पर भी आग चढ़ी बैठी होगी और ख़ूब जलायेगी। आग बन्द कर दी जाएगी यानी दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में भर कर आग से दरवाज़े बन्द कर दिए जाएंगे क्योंकि उसमें उनको हमेशा रहना होगा। निकलना तो नसीब ही न होगा। लम्बे-लम्बे सुतूनों का मतलब यह है कि आग के इतने-इतने बड़े शोले होंगे जैसे सुतून होते हैं और दोज़ख़ी उसमें बन्द होंगे। —ब्यानुल क़ुरआन

दोज़ख़ पर मुक़र्रर फ़रिश्तों की तादाद

अलैहा तिस् अ़ त अशर عليها تسعة عشر

'दोज़ख़ पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे।' —मुद्दस्सिर

फ़ायदा : इन उन्नीस में से एक मालिक है और बाक़ी ख़ाज़िन (ख़ज़ान्ची) हैं और गो दोज़ख़ियों को सज़ा देने के लिए उनमें का एक फ़रिश्ता भी काफ़ी है मगर तरह-तरह के अ़ज़ाब देने और अ़ज़ाब के इन्तज़ाम के लिए 19 फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जिनके मुतअ़ल्लिक सूरः तहरीम में है—

عَلَيۡهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعۡصُوۡنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمۡ وَيَفۡعَلُوۡنَ
مَا يُؤۡمَرُوۡنَ ۞

अ़लैहा मलाइकतुन ग़िलाज़ुन शिदादुल ला यअ़्सूनल्ला ह मा अ म र हुम व यफ़अ़लू न मा युअ़्मरून।

'उस पर सख़्त और मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह की (ज़रा), नाफ़रमानी उसके हुक्म में नहीं करते और जो हुक्म होता है वही करते हैं।'

'ब्यानुल क़ुरआन' में दुर्रे मंसूर से नक़ल किया है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि दोज़ख़ पर मुक़र्रर फ़रिश्तों में से हर एक की तमाम जिन्नों व इन्सानों के बराबर ताक़त है।

दोज़ख़ का ग़ैज़ व ग़ज़ब, चीख़ना-चिल्लाना और दोज़ख़ियों को आवाज़ देकर बुलाना और दोज़ख़ियों का तंग जगहों में डाला जाना

وَلِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِرَبِّهِمۡ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ؕ اِذَآ اُلۡقُوۡا
فِيۡهَا سَمِعُوۡا لَهَا شَهِيۡقًا وَّهِىَ تَفُوۡرُ ۙ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الۡغَيۡظِ ؕ (ملك ٢٩)

व लिल्लज़ी न क फ़ रू बिरब्बिहिम अ़ज़ाबु जहन्नम व बिअ़्सल मसीर। इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिऊ लहा शहीक़ौं व हि य तफ़ूर। तकादु तमैयज़ु मिनल गैज़। —सूरः मुल्क

'और जो लोग अपने रब का इन्कार करते हैं उनके लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है और वह बुरी जगह है। जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे तो उसकी एक बड़ी ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह इस तरह जोश मारता होगा जैसे अभी ग़ुस्से की वजह से फट पड़ेगा।'

हज़रत हकीमुल उम्मत क़ुद्दुस सिर्रहू 'ब्यानुल क़ुरआन' में लिखते हैं

कि या तो अल्लाह तआला उसमें समझ और ग़ुस्सा[1] पैदा कर देगा। हक़ का ग़ज़ब जिन पर हुआ है उन पर उसको भी ग़ुस्सा आयेगा या मिसाल देकर समझाना मक़सूद है कि ऐसा मालूम होगा जैसे दोज़ख़ को ग़ुस्सा आ रहा है—

إِذَا رَأَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝ وَإِذَا أُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝ (فرقان)

इज़ा रअतहुम मिम मकानिम बईद। समिऊ लहा तग़ैयुजौं व ज़फ़ीरा। व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन ज़ैयिक़म मुक़र्रनी न दऔ हुनालि क सुबूरा।

'जब वह (दोज़ख़) उनको दूर से देखेगा तो (वह देखते ही इतना ग़ज़बनाक होकर जोश मारेगा कि) वे लोग (दूर ही से) उसका जोश व ख़रोश सुनेंगे और जब वह उसकी किसी तंग जगह में हाथ-पांव पकड़ कर डाल दिए जाएंगे तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे।'

फ़ायदा : अभी जहन्नम दोज़ख़ियों से सौ साल के फ़ासले पर होगा कि उसकी नज़र उन पर पड़ेगी और उनकी नज़रें उस पर पड़ेगी। वह देखते ही पेच व ताब खायेगा और जोश व ख़रोश से आवाज़ें निकालेगा जिनको व सुन लेंगे और जब उसमें धकेल दिये जायेंगे तो मौत को पुकारेंगे यानी जैसे दुनिया में किसी मुसीबत के वक़्त कहते हैं, हाय मर गये!

इब्न अबी हातिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने *'इज़ा रअतहुम'* को पढ़कर दोज़ख़ की दो आखें साबित फ़रमायीं। —इब्न कसीर

अगरचे दोज़ख़ बहुत बड़ी जगह है, लेकिन अज़ाब के लिए दोज़ख़ियों को तंग-तग जगहों में रखा जाएगा। कुछ रिवयतों में ख़ुद रसूले ख़ुदा ﷺ से इसकी तफ़सीर नक़ल की गयी है कि जिस तरह दीवार में कील गाड़ी जाती

1. दूसरी बहुत-सी रिवायतों से भी मालूम होता है कि दोज़ख़ और जन्नत को अल्लाह पाक समझ दे देंगे। (अल्लाह ही बेहतर जानता है)

है, उसी तरह दोज़ख़ियों को देज़ख़ में ठूंसा जाएगा। —इब्न कसीर

تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰی○ وَجَمَعَ فَاَوْعٰی○ (معارج)

तद्उ मन अद ब र व तवल्ला। व ज म अ़ फ़औआ़। —मआरिज

'दोज़ख़ उस शख़्स को (ख़ुद) बुलायेगा जिसने (दुनिया में हक़ से) पीठ फेरी होगी और (ताअ़त से) बेरुख़ी की होगी और (माल) जमा किया होगा फिर उठा-उठा कर रखा होगा।'

इब्ने कसीर में है कि जिस तरह जानवर दाना खोज कर चुगता है उसी तरह दोज़ख़ हश्र के मैदान से बुरे लोगों को एक-एक करके देख-भाल के चुन लेगा। इस आयत में माल जमा करने वालों वालों का ज़िक्र है। हज़रत क़तादा ﵁ इसकी तफ़सीर फरमाते थे कि जिसने जमा करने में हलाल व हराम का ख़्याल न रखा और ख़ुदा के फ़रमान के बावजूद ख़र्च न करता था, वह शख़्स मुराद है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हकीम इस आयत के डर की वजह से कभी थैली का मुंह ही बंद न करते थे। हज़रत हसन बसरी (रह०) फ़रमाते थे कि ऐ इब्न आदम! तू ख़ुदा का डरावा सुनता है और फिर माल समेटता है। रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया—

'क़ियामत के दिन इंसान को बकरी के बच्चे की तरह (यानी ज़िल्लत की हालत में) लाकर ख़ुदा के सामने खड़ा कर दिया जाएगा। अल्लाह जल्ल ल शानुहू उससे फ़रमायेंगे : क्या मैंने तुझको माल नहीं दिया? बता तूने (उसके शुक्रिए में) क्या किया? इस पर जवाब देगा, ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने जमा किया और ख़ूब बढ़ाया और जितना था उससे कहीं ज़्यादा छोड़ा, इसलिए मुझे इजाज़त दीजिए कि इस सबको ले आऊं। गर्ज़ यह कि वह बंदा ऐसा होगा कि उसने कुछ ख़ैर आगे न भेजी होगी, इसलिए उसको दोज़ख़ में पहुंचा दिया जाएगा। —तिर्मिज़ी

और यह भी इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है जिसका कोई

घर नहीं है और उसका माल है जिसका कोई माल नहीं और दुनिया के लिए वह जमा करता है जिसके पास कुछ भी अक़्ल न हो। —तिर्मिज़ी

बैहक़ी ने शोबुल ईमान में मर्फ़ूअ़[1] हदीस नक़ल की है कि जब मरने वाला मर जाता है तो फ़रिश्ते कहते हैं की उसने आख़िरत में क्या भेजा है और इंसान कहते हैं कि उसने दुनिया में क्या छोड़ा है?

दोज़ख़ की बागें और उसके खींचने वाले फ़रिश्ते

हज़रत इब्ने मस्ऊद ؓ फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि उस दिन दोज़ख़ को लाया जाएगा जिसकी सत्तर हज़ार बागें होंगी और हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे जो उसको खींच रहे होंगे। —मुस्लिम शरीफ़

हाफ़िज़ अ़ब्दुल अज़ीज़ मुन्ज़री ؒ ने 'अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब' में हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ का इर्शाद नक़ल फ़रमाया है कि मान लीजिए अगर इस वक़्त फ़रिश्ते दोज़ख़ की बागें छोड़ दें तो हर नेक व बद को अपने घेरे में ले ले।

दोज़ख़ के सांप और बिच्छू

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बेशक दोज़ख़ में बड़ी लम्बी गरदनों वाले ऊंटों के बराबर सांप हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीकत यह है कि) एक बार जब उनमें से एक सांप डसेगा दोज़ख़ी चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। (फिर फ़रमाया) और बेशक दोज़ख़ में पालान से लदे हुए ख़च्चर की तरह बिच्छू हैं (जिनके ज़हरीले माद्दे की हक़ीक़त यह है कि) एक बार जब उनमें से एक बिच्छू डसेगा तो दोज़ख़ी चालीस तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। —अहमद

---

1. ऐसी हदीस जिसके सब रावी (सच्चे) हों और कहीं कोई रावी छूटता न हो।

क़ुरआन शरीफ़ में है :

زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ

ज़िद्नाहुम अज़ाबन फ़ौक़ल अज़ाब।

यानी 'हम उनके लिए अज़ाब बढ़ा देंगे उस शरारत के बदले जो वे करते थे।'

हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि आग के आम अज़ाब के अलावा उनके लिए यह अज़ाब बढ़ा दिया जाएगा कि इन पर बिच्छू मुसल्लत किए जाएंगे, जिनके कीलें (बड़े दांत) लम्बी-लम्बी खजूरों के बराबर होंगे।

—तर्ग़ीब

दोज़ख़ में मौत न आयेगी और अज़ाब हल्का न होगा

क़ुरआन हकीम में इर्शाद है :

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ (زخرف)

ला युफ़त्तरु अन्हुम व हुम फ़ीही मुब्लिसून। —ज़ुख़रुफ़

'उनका अज़ाब हल्का न किया जाएगा और वे उसी में मायूस पड़े रहेंगे।'

दूसरी जगह इर्शाद है :

لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا (فاطر)

ला युक़्ज़ा अलैहिम फ़यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम मिन अज़ाबिहा।

—फ़ातिर

'न तो उनकी क़ज़ा (मौत) आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जायेगा।'

यानी दोज़ख़ में यह भी नहीं हो सकता कि अ़ज़ाब में पड़े-पड़े मौत ही आ जाए और अ़ज़ाब से बच जाएं, बल्कि वहां बेइंतिहा तकलीफ़ होने पर भी ज़िंदा रहेंगे। हदीस में है कि जब जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में जा चुकेंगे (और दोज़ख़ से कोई जन्नत में जाने वाला बाक़ी न रहेगा), तो दोज़ख़ और जन्नत के दर्मियान (मेंढे की सूरत में) मौत लायी जाएगी। इसके बाद एक पुकारने वाला पुकारेगा कि ऐ जन्नत वालो! अब मौत न आयेगी और ऐ दोज़ख़ वालो! अब मौत न आयेगी। इस ऐलान के सुनने से जन्नत वालों की ख़ुशी बढ़ जायेगी और दोज़ख़ वालों का रंज बढ़ जायेगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

दोज़ख़ की आवाज़ *'हल मिम मज़ीद'*

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَئْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ (ق)

यौ म नक़ूलु लिजहन्न म हलिम तलअ्ति व तक़ूलु हम मिम् मज़ीद। *—सूरः क़ाफ़*

'जिस दिन हम कहेंगे दोज़ख़ से, क्या तू भर चुकी? वह कहेगी कि क्या कुछ और भी है?' —तर्जुमा शैख़ुल हिंद रह०

हदीस शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जहन्नम में दोज़ख़ी डाले जाते रहेंगे और दोज़ख़ *'हल मिम मज़ीद'* (क्या और भी है?) कहता जाएगा और सब दोज़ख़ी दाख़ील हो जाएंगे, जब भी न भरेगा, यहां तक कि अल्लाह उस पर अपना क़दम शरीफ़ रख देंगे जिसकी वजह से दोज़ख़ सिमट जाएगा और यूँ अ़र्ज़ करेगा : क़ई क़ई बिइज़्ज़तिक व क र मिक (बस, बस! आप की इ़ज़्ज़त और करम का वास्ता देता हूं।)—मिश्कात

सब्र करने पर भी अ़ज़ाब से रिहाई न होगी

दुनिया में तरीक़ा है कि सब्र करने से मुसीबत के बाद राहत नसीब

हो जाती है मगर दोज़ख़ के अ़ज़ाब के बारे में इर्शाद है :

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْلَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَاكُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝ (طور)

'इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू। सवाउन अ़लैकुम इन्नमा तुज्ज़ौ न मा कुन्तुम तअ़्मलून' —सूरः तूर

'दोज़ख़ियों से कहा जाएगा : इसमें दाख़िल हो जाओ फिर सब्र करो या न करो, तुम्हारे हक़ में दोनों बराबर हैं जैसा कि तुम करते थे वैसा ही तुम्हें बदला दिया जाएगा।'

दोज़ख़ियों का खाना-पीना

ज़रीअ़् यानी आग के कांटे

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ، لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ

तुस्क़ा मिन ऐनिन आनियः। लै स लहुम तआमुन इल्ला मिन ज़रीअ़्। ला युस्मिनु व ला युग्नी व ला मिन जूअ़्। —ग़ाशियः

'दोज़ख़ियों को खौलते हुए चश्में का पानी मिलेगा और सिवाए झाड़-कांटों वाले खाने के इनके लिए कुछ खाना न होगा। जो न ताक़त देगा, न भूख दूर करेगा।' —ग़ाशियः

साहिबे मिर्क़ात लिखते है कि 'ज़रीअ़्' हिजाज़ में एक कांटेदार पेड़ का नाम है जिसकी ख़बासत (बेमज़ा, बदबूदार होने) की वजह से जानवर भी पास नहीं फटकते। अगर जानवर खा ले तो मर जाए। फिर लिखते हैं : यहां 'ज़रीअ़्' से आग के कांटे मुराद हैं जो एलवे से कड़वे, मुर्दा से ज़्यादा बदबूदार और आग से ज़्यादा गर्म होंगे और जिनको बहुत ज़्यादा खाने के

बाद भी भूख दूर न होगी।

ग़िस्लीन (घावों का धोवन)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ، وَّلَاطَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ، لَايَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ○ (الحاقة)

फ़लै स लहुल यौ म हाहुना हमीम। व ला तआमुन इल्ला मिन ग़िस्लीन। ला यअ्कुलुहू इल्ललख़ातिऊन। —हाक़्क़:

'आज उसका कोई दोस्त नहीं और न कुछ खाने को ही है सिवाए घावों के धोवन के जिसे सिर्फ़ गुनाहगार खाते हैं।'

ज़क़्क़ूम (सेंढ)

اِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّوْمِ طَعَامُ الْاَثِيْمِ كَالْمُهْلِ يَغْلِىْ فِى الْبُطُوْنِ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ○ (دخان)

इन्न न शजर तज़्ज़क़्क़ूम। तआमुल असीम। कलमुह्लि यग़्ली फ़िल बुतून। क ग़ल्यिल हमीम। —सूरः दुख़ान

'बेशक गुनाहगार का खाना पिघले हुए तांबे जैसा ज़क़्क़ूम का पेड़ है जो पेटों में गरम पानी की तरह खौलेगा।'

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ○ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ○ فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ○ فَشَارِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ○ فَشَارِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ○ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ○

सुम्म म इन्नकुम ऐयुहज़्ज़ाल्लुनल मुकज़्ज़िबून। ल आकिलू न मिन श ज रिम मिन ज़क़्क़ूम। फ़मालिऊ न मिनहल बुतून। फ़शारिबू न अलैहि मिनल हमीम। फ़शारिबू न शुर्बलहीम। हाज़ा नुज़ुलुहुम यौमद्दीन। —सूरः वाक़िअः

'फिर ऐ झुठलाने वाले गुमराह लोगो! तुम ज़क़्क़ूम के पेड़ खाओगे और उससे अपने पेट भर लोगे। फिर ऊपर से खौलता हुआ पानी पियोगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं। क़ियामत के दिन इस तरह उनकी मेहमानी होगी।'

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْ أَصْلِ الْجَحِيْمِ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ○

इन्नहा श ज र तुन फ़ी अस्लिल जहीम। तलउहा क अन्ननहू रुऊसुश्शयातीन। —सूरः साफ़्फ़ात

'असल में वह (ज़क़्क़ूम) एक पेड़ है जो दोज़ख़ की जड़ में से निकलता है। इसके फल ऐसे हैं जैसे सापों के फल।'

फ़ायदा : ज़क़्क़ूम का तर्जुमा सेंढ किया जाता है जो मशहूर कड़वा पेड़ है। लेकिन यह सिर्फ़ समझाने के लिए है। क्योंकि वहां की हर चीज़ कड़वाहट और बदबू वग़ैरह में यहां की चीजों से कहीं ज़्यादा बुरी है और खौलता हुआ पानी पियेंगे और वह भी थोड़ा बहुत नहीं बल्कि प्यासे ऊटों की तरह ख़ूब ही पियेंगे।

أَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنَ الزَّقُّوْمِ وَالْحَمِيْمِ وَسَائِرِ أَنْوَاعِ عَذَابِ الْجَحِيْمِ

अआ़ ज़ नल्लाहु तआ़ला मिनज़्ज़क़्क़ूम वल हमीम व साइरि अन्वाइ अ़ज़ाबल जहीम।

रसूले खुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा (बूंद) भी दरिया में टपका दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर तमाम दुनिया वालों के खाने बिगाड़ डाले (यानी सब कड़वे हो जाएं)। अब बताओ कि उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही ज़क़्क़ूम होगा।—तिर्मिज़ी व इब्ने हब्बान वग़ैरह

हाकिम की रिवायत में है कि खुदा की क़सम! अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा दुनिया के दरियाओं में डाल दिया जाए तो वह यक़ीनन तमाम दुनिया वालों की गिज़ाएं कड़वी कर दे; तो बताओ उसका क्या हाल होगा जिसका खाना ही ज़क़्क़ूम होगा। —तर्ग़ीब

ग़स्साक़

لَايَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَاشَرَابًا اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا

ला यज़ूक़ू न फ़ीहा बर्दौं व ला शराबन इल्ला हमीमौं व ग़स्साक़ा।

—सूरः नबा

'वह उस दोज़ख़ में खौलते हुऐ पानी और ग़स्साक़ के अलावा किसी ठंढक और पीने की चीज़ का मज़ा तकन चख सकेंगे।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया : अगर ग़स्साक का एक डोल दुनिया में डाल दिया जाए तो तमाम दुनिया वाले सड़ जाएं। —तिर्मिज़ी व हाकिम

ग़स्साक़ क्या चीज़ है? इसके बारे में उम्मत के बुज़ुगों के अलग-अलग क़ौल हैं। साहिबे मिर्क़ात ने चार क़ौल नक़ल किए हैं—

1. दोज़ख़ियों के पीप और उनका धोवन है।
2. दोज़ख़यों के आंसू मुराद हैं।
3. दोज़ख़ का ठंढक वाला अज़ाब मुराद है और
4. ग़स्साक़ सड़ी हुई और ठंढी पीप है जो ठंढक की वजह से पी न जा सकेगा (मगर भूख की वजह से मजबूरन पीनी पड़ेगी) बहरहाल ग़स्साक़ बुरी चीज़ है।

अल्लहुम्मा अईज़ना मिन्हु।

माइन कल्मुहल (कीट)

وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْ يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا (كهف)

व इंयस्तग़ीसू न युग़ासू बिमाइन कल्मुहलि यश्विल वुजूह। बिअ्सश्शराब। व साअत मुर्तफ़क़ा। *—सूरः कहफ़*

'और अगर प्यास से तड़पकर फ़रयाद करेंगे तो उनको ऐसा पानी

दिया जाएगा जो तेल की तलछट (कीट) की तरह होगा जो चेहरों को भून डालेगा। क्या ही बुरा पानी होगा और दोज़ख़ क्या ही बुरी जगह है?'

माइन सदीद (पीप का पानी)

وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَاهُوَ بِمَيِّتٍ

व युस्क़ा मिम माइन सदीद। य त जर्रउहू व ला यकादु युसीग़ुहु व यअ्तीहिल मौतु मिन कुल्लि मकानिउँ वमा हु व बिमैयित।

'उस (दोज़ख़ी) को पीप का वह पानी पिलाया जायेगा जिसको वह घूंट-घूंट कर के पियेगा और उसको गले से मुश्किल से उतार सकेगा और उसको हर तरफ़ से मौत (आती हुई) नज़र आयेगी, मगर वह मरेगा नहीं।'

यानी हर तरफ़ से तरह-तरह के अ़ज़ाब देखकर समझेगा कि अब मैं मरा, अब मरा। मगर वहां मौत न होगी कि मरकर ही पाप कट जाए और अ़ज़ाब से रिहाई हो सके।

हमीमुन (खौलता हुआ पानी)

وسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ

व सुक़ू माअन हमीमन फ़ क़ त्त अ़ अम् आ़अहुम। —*मुहम्मद*

'और दोज़ख़ियों को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा तो उनकी आंतों के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।

तआ़मुन ज़ी ग़ुस्सतिन (गले में अटकने वाला खाना)

اِنَّ لَدَيْنَا اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا وَّطَعَامًا ذَاغُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا

इन्न न लदैना अन्कालौं व जहीमौं व तआ़मन ज़ा ग़ुस्सतिउं व

अ़ज़ाबन अलीमा। —*सूरः मुज़्ज़म्मिल*

'बेशक (इन काफ़िरों के लिए) हमारे पास बेड़ियाँ और आग का ढ़ेर और गले में अटक जाने वाला खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब है।'

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते थे कि *'तआ़मुन ज़ा ग़ुस्सतिन'* एक कांटा होगा जो गले में अटक जाएगा। न बाहर निकलेगा, न नीचे उतरेगा। —तर्ग़ीब

हज़रत अबूदर्दा ﷺ रसूले ख़ुदा ﷺ से रिवयत फ़रमाते हैं कि आपने फ़रमाया : दोज़ख़ियों को (इतनी ज़बरदस्त) भूख लगा दी जाएगी जो अकेली ही उस अ़ज़ाब के बराबर होगी जो उनके भूख के अलावा हो रहा होगा, इसलिए वे खाने के लिए फ़र्याद करेंगे। इस पर उनको ज़रीअ़् का खाना दिया जायेगा; जो न मोटा करे, न भूख दूर करे, फिर दोबारा खाना तलब करेंगे तो उनको *'तआ़मुन ज़ा ग़ुस्सतिन'* (गले में अटकने वाला खाना) दिया जाएगा जो गलों में अटक जाएगा। उसके उतारने के लिए उपाय सोचेंगे तो याद करेंगे कि दुनिया में पीने की चीज़ों को मांगते थे। चुनांचे खौलता हुआ पानी लोहे की संडासियों के ज़रिए उनके सामने कर दिया जायेगा। वे संडासियां जब उनके चेहरों के क़रीब होंगी तो उनके चेहरों को भून डालेंगी। फिर जब पानी पेटों में पहुंचेगा तो पेट के अन्दर की चीज़ों (यानी आंतों वग़ैरह) के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। —मिश्कात

हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने *'युस्क़ा मिम माइन सदीदीं य त जर्र उ हू'* पढ़कर फ़रमाया *'माइन सदीद'* (पीप का पानी) जब दोज़ख़ी के मुंह के क़रीब किया जाएगा तो वह उससे नफ़रत करेगा फिर और क़रीब किया जायेगा तो चेहरे को भून डालेगा और उसके सर की खाल गिर पड़ेगी। फिर जब उसे पियेगा तो अंतड़ियां काट डालेगा और आख़िर में पाख़ाना की जगह से बाहर निकल जायेगा। इसके बाद रसूले ख़ुदा ﷺ ने यह आयतें पढ़ीं।

अज़ाब के अलग-अलग तरीके

दोज़ख़ की आग और उसकी कड़ी गर्मी, सांप, बिच्छू, खाने-पीने की चीज़ें, अंधेरा यह सब कुछ अज़ाब ही होगा मगर यह जो कुछ अब तक ज़िक्र किया गया, दोज़ख़ के अज़ाब से थोड़-सा अलग है। क़ुरआन व हदीस से मालूम होता है कि इन तरीक़ों के अलावा और भी बहुत से तरीकों से अज़ाब दिया जाएगा जिनमें से कुछ नीचे लिखे जाते हैं :

सह्र (खौलता हुआ)

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيْمُ يُصْهَرُ بِهِ مَافِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ

युसब्बु मिन फ़ौकि रुऊसिहिमुल हमीम। युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम वल्जुलूद। —सूरः हज

'उनके सरों पर जलता-जलता पानी डला जाएगा जिसकी तेज़ी से उनके पेट में से और खाल में से सब कुछ गलकर बाहर निकल जाएगा।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक खौलता हुआ पानी ज़रूर दोज़ख़ियों के सरों पर डाला जाएगा जो उनके पेट में पहुंचकर कर उन तमाम चीज़ों को काट देगा जो उनके पेटों के अंदर हैं और आख़िर में क़दमों से निकल जाएगा। इसके बाद फिर दोज़ख़ी को वैसा ही कर दिया जाएगा जैसा था। फिर इर्शाद फ़रमाया कि आयत में जो लफ़्ज़ 'युस्हरू' है उसका यही मतलब है। —तिर्मिज़ी, बैहक़ी

मक़ामिउ (गुर्ज़)

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ كُلَّمَا اَرَادُوْا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ
اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ (حج)

व लहुम मक़ामिउ मिन हदीद। कुल्लमा अरादू ऐंयख़्रुजू मिन्हा

मिन ग़म्मिन उइदू फ़ीहा व ज़ूक़ू अज़ाबल हरीक़। —सूरः हज

'और दोज़ख़ियों (को मारने के लिए) लोहे के गुर्ज़ हैं। वे लोग जब भी दोज़ख़ की घुटन से निकलना चाहेंगे, फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि जलने का अ़ज़ाब चखते रहें।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि (दोज़ख़ का) लोहे का एक गुर्ज़ ज़मीन पर रख दिया जाए तो अगर उसको तमाम जिन्न और इंसान मिलकर उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते। —अहमद, अबू'याला

और एक रिवायत में है कि जहन्नम के लोहे का गुर्ज़ अगर पहाड़ पर मार दिया जाए तो वह यक़ीनी तौर पर रेज़ा-रेज़ा[1] होकर राख हो जाएगा। —तर्ग़ीब

खाल पलट दी जाएगी

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ (نساء)

कुल्लमा नज़िजत जुलूदुहुम बद्दलनाहुम जुलूदन ग़ैरहा लियज़ूक़ुल अ़ज़ाब।

'जब एक बार उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उसकी जगह दूसरी नयी खाल पैदा कर देंगे ताकि अ़ज़ाब चखते ही रहें।'

हज़रत हसन बसरी (रह०) से नक़ल किया है कि दोज़ख़ियों को हर दिन सत्तर हज़ार बार आग जलायेगी। हर बार जब आग जलायेगी तो कहा जायेगा- जैसे थे वैसे ही हो जाओ। चनांचे वे हर बार वैसे ही हो जायेंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

1. कण-कण

अलग-अलग सज़ाएं

इल्म छिपाने वाले की सज़ा

रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिससे कोई इल्म की बात पूछी गयी और उसने जानते हुए (न बतायी बल्कि) उसको छिपा लिया तो उसके मुंह में आग की लगाम लगायी जाएगी। —मिश्कात शरीफ़

शराब या नशे वाली चीज़ पीने वाले की सज़ा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मेरे रब ने क़सम खाई है कि मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम है, मेरे बन्दों में से जो भी बन्दा शराब का कोई घूंट पियेगा तो उसको उतनी ही पीप पिलाऊंगा और बन्दा मेरे डर से शराब छोड़ेगा, उसको पाक-साफ़ हौज़ों से पिलाऊंगा। —अहमद

मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया .खुदा ने अपने ज़िम्मे यह अ़हद कर लिया है कि जो कोई नशेदार चीज़ पीएगा क़ियामत के दिन ज़रूर उसको 'तीनतुल ख़बाल' में से पिलायेगा। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया 'तीनतुल ख़बाल' क्या है? इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ियों का पसीना या दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़। —मिश्कात

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिसकी आ़दत शराब पीने की थी और वह इसी हाल में मर गया तो अल्लाह तआ़ला उसको 'नहरुल ग़ोता' से पिलाएंगे। अ़र्ज़ किया गया 'नहरुल ग़ोता' किया है? इर्शाद फ़रमाया : एक नहर है जो ज़िना कराने वाली औ़रतों की शर्मगाहों से जारी होगी। —अहमद व इब्ने हब्बान

बेअ़मल वाइजों की सज़ा

रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि जिस रात मुझको मे'राज करायी गई, मैंने ऐसे लोग देखे जिनके होंठ आग की कैंचियों से काटे जा रहे थे।

मैंने पूछा : ऐ जिब्रील ﷺ! ये कौन लोग हैं? उनहोंने कहा : ये आपकी उम्मत को वे वाइज़[1] हैं जो लोगों की भलाई का हुक्म करते हैं और अपने आप को भूल जाते हैं और अल्लाह की किताब पढ़ते हैं लेकिन अ़मल नहीं करते। —मिश्कात शरीफ़

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जायेगा फिर उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा। उसकी अंतड़ियां आग में जल्दी से निकल पड़ेंगी फिर वह उसमें इस तरह घूमेगा जिस तरह गधा चक्की को लेकर घूमता है। उसका हाल देखकर दोज़ख़ी उसके पास जमा हो जाएंगे और उससे कहेंगे कि ऐ फ़लां। तुझे क्या हुआ है? क्या तू हमको भलाई का हुक्म न करता था और बुराई से न रोकता था वह कहेगा हां तुमको भलाई का हुक्म करता था मगर ख़ुद न करता था और तुमको बुराई से रोकता था, मगर उसको ख़ुद करता था।

सोने-चांदी के बर्तन इस्तेमाल करने वालों की सज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिसने सोने या चांदी के बर्तन में या किसी ऐसे बर्तन में कुछ खाया-पिया, जिसमें सोने या चांदी का हिस्सा हो वह अपने पेट में दोज़ख़ की आग भरता है। —दारे क़ुत्नी

फ़ोटोग्राफ़र की सज़ा

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि अल्लाह के नज़दीक सबसे सख़्त अज़ाब तस्वीर बनाने वालों पर होगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

और इर्शाद फ़रमाया कि तस्वीर बनाने वाला दोज़ख़ में होगा। उसकी बनाई हुई तस्वीर के बदले एक जान बना दी जाएगी जो उसको दोज़ख़ में अज़ाब देगी। —बुख़ारी व मुस्लिम

इस रिवायत के बाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया अगर तुझे बनानी ही है तो पेड़ और बेजान चीज़ की तस्वीर बना ले। —मिश्कात

1. वाज़ व नसीहत करने वाले

खुदकुशी[1] करने वाले की सज़ा

रसुले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : जिसने पहाड़ से गिरकर ख़ुदकुशी कर ली तो वह दोज़ख़ की आग में होगा। उसमें हमेशा[2] (चढ़ता और गिरता) रहेगा और जिसने ज़हर पीकर ख़ुदकुशी कर ली तो उसका ज़हर उसके हाथ में होगा जिसको दोज़ख़ की आग में हमेशा-हमेशा पीता रहेगा और जिसने किसी लोहे की चीज़ से ख़ुदकुशी कर ली तो उसकी वह लोहे की चीज़ उसके हाथ में होगी जिस को हमेशा दोज़ख़ की आग में अपने पेट में घोंपता रहेगा।

—बुख़ारी

घमंडी की सज़ा

रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : घमंड करने वाले चूंटियों के बराबर जिस्मों में उठाये जाएंगे जिनकी शक्लें इंसानों की होंगी। फिर फ़रमाया : हर तरफ़ से उनको ज़िल्लत घेर लेगी। (फिर फ़रमाया) वे दोज़ख़ के जेलख़ाने की तरफ़ इसी तरह हंकाये जाएंगे। इस जेलख़ाने का नाम बोल्स है। उनपर आगों को जलाने वाली आग चढ़ी होगी और उनको 'तीनतुल ख़बाल' यानी दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़ पिलाया जाएगा। —मिश्कात शरीफ़

तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि बेशक जहन्नम में एक वादी है जिसको 'हब-हब' कहा जाता है उसमें हर जब्बार (सरकश) रहेगा।

दिखावटी आबिदों की सज़ा

रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया : जुब्बुल हुज़्न (ग़म के कुएं) से पनाह मांगो। सहाबा رضی اللہ عنہم ने अर्ज़ किया कि जुब्बुल हुज़्न क्या है? इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ में एक गढ़ा है जिससे हर दिन खुद दोज़ख़ चार सौ बार पनाह चाहता है।

---

1. आत्म-हत्या
2. यह काफ़िर के मुतअल्लिक़ है। मुसलमान ख़ुदकुशी करने वाला ख़ुदकुशी की सज़ा पूरी कर लेने के बाद दूसरे गुनाहगार मुसलमानों की तरह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।

अ़र्ज़ किया गया इसमें कौन जाएगा? फ़रमाया : अपने आ़माल का दिखलावा करने वाले आ़बिद (इबादत करने वाले) जाएंगे। —तिर्मिज़ी शरीफ़

इब्ने माजा की रिवायत में यह भी है कि इसके बाद आप ﷺ ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह के नज़दीक़ सबसे बदतरीन इबादतगुज़ारों में वह भी हैं जो (ज़ालिम) अमीरों (सरदारों) के पास जाते हैं यानी उनकी ख़ुशामद और चापलूसी के लिए। —मिश्कात शरीफ़

सऊद (आग का एक पहाड़)

कुरआन शरीफ़ में हैं :

स उर्हिक़ुहू सऊदा। —*मुद्दस्सिर*

'बहुत जल्द मैं उसको सऊ़द पर चढ़ऊंगा (जो दोज़ख़ में आग का पहाड़ है)'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि 'सऊद' आग का एक पहाड़ है जिस पर दोज़ख़ी को सत्तर साल तक चढ़ाया जाएगा फिर सत्तर साल तक ऊपर से गिराया जाएगा यानी 70 साल तक तो वह ऊपर चढ़ा था अब सत्तर साल तक गिरते-गिरते नीचे पहुंचेगा और हमेशा उसके साथ ऐसा ही होता रहेगा। —तिर्मिज़ी

सिलसिलः (बहुत लंबी ज़ंजीर)

क़ुरआन शरीफ़ में है :

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ط

ख़ुज़ूहु फ़ ग़ुल्लूहु। सुम्मल जही म सल्लूह। सुम्म म फ़ी सिलसिल तिन ज़रउहा ज़िराअ़न फ़स्लुकूह। —*अल-हाक़्क़ः*

'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) उसको पकड़ो फिर उसको तौक़ पहना

दो फिर दोज़ख़ में दाख़िल कर दो फिर ऐसी ज़ंजीर में जकड़ दो जिसकी नाप सत्तर गज़ है।

हज़रत हकीमुल उम्मत क़ुदुस सिर्रहू ब्यानुल क़ुरआन में लिखते हैं कि उस गज़ की मिक़दार ख़ुदा को मालूम है क्योंकि यह गज़ वहां का होगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अगर रांग का एक टुकड़ा ज़मीन की तरफ़ आसमान से छोड़ दिया जाए तो रात के आने से पहले ज़मीन तक पहुंच जाए जो पांच सौ साल की दूरी है और अगर वह टुकड़ा दोज़ख़ी की ज़ंजीर के सिरे से छोड़ा जाए तो दूसरे तक पहुंचने से पहले चालीस साल तक चलता रहेगा।

—तिर्मिज़ी शरीफ़

इससे मालूम हुआ कि दोज़ख़ियों के जकड़ने की ज़ंजीरे आसमान और ज़मीन के बीच की दूरी से भी लंबी होंगी।

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ फ़रमाते थे कि ये ज़ंजीरें उसके जिस्म में पिरो दी जाएंगी। पाख़ाने के रास्ते से डाली जाएंगी; फिर उसे आग में इस तरह भूना जाएगा जैसे सीख़ में कबाब और तेल में टिड्डी भूनी जाती है। —इब्ने कसीर

तौक़

अल्लाह जल्ल ल शानुहू का इर्शाद है :

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا (دهر)

इन्ना अअ्तदना लिलकाफ़िरी न सलासि ल अग़्लालौं व सईरा।

—सूरः दह्र

'और हमने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें, तौक़ और धधकती आग तैयार कर रखी है।'

सूरः मोमिन में है :

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ إِذِ الْأَغْلَٰلُ فِىٓ أَعْنَٰقِهِمْ وَالسَّلَٰسِلُ يُسْحَبُونَ فِى الْحَمِيمِ ثُمَّ فِى النَّارِ يُسْجَرُونَ (مومن)

फ़ सौ फ़ यअ्लमू न इज़िल अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम वस्सलासिल। युस्हबू न फ़िल हमीम। सुम्म म फ़िन्नारि युस्जरून।

'उनको अभी मालूम हो जाएगा जबकि तौक़ उनकी गरदनों में होंगे और (उन तौक़ों में) ज़ंजीरें (पिरोयी हुई होंगी और इस तरह वह) घसीटते हुए गर्म पानी में ले जाए जाऐं फिर आग में झोंक दिए जाएंगे।'

इब्ने अबी हातिम की एक मर्फ़ूअ् हदीस में है कि एक तरफ़ से काला बादल उठेगा जिसे दोज़ख़ी देखेंगे। उनसे पूछा जाएगा तुम क्या चाहते हो? वह दुनिया पर सोच करके कहेंगे हम यह चाहते हैं कि बादल बरसे! चुनांचे उसमें से तौक़ और ज़ंजीर और आग के अंगारे बरसने लगेंगे; जिनके शोले उन्हें जलायेंगे और उनके तौक़ों व ज़ंजीरों में और बढ़ोतरी हो जाएगी।

—इब्ने कसीर

जिस खौलते पानी में दोज़ख़ी डाले जाएंगे उसके मुतअ़ल्लिक़ हज़रत क़तादा ﷺ फ़रमाते हैं कि गुनाहगार के बाल पकड़ कर उस पानी में ग़ोता दिया जाएगा तो उसका तमाम गोश्त गल कर गिर जाएगा और हड्डियों के ढांचे और दो आंखों के सिवा कुछ न बचेगा।

गंधक के कपड़े

सूरः इब्राहीम में इर्शाद है :

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ

सराबीलुहुम मिन क़ति रानिउँ व तग़्शा वुजू ह हुमुन्नार।

'उनके कुर्ते गंधक के होंगे और उनके चेहरों पर आग लिपटी हुई होगी।'

फ़ायदा : हज़रत हकीमुल उम्मत (रह०)लिखते हैं कि चीड़ के तेल को क़तिरान कहते हैं (जिसका तर्जुमा गंधक किया गया है) और उसके कुर्ते का मतलब यह है कि सारे बदन को क़तिरान लिपटी

होगी ताकी उसमें जल्दी और तेज़ी के साथ आग लग सके।

—ब्यानुल क़ुरआन

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते थे कि 'क़तिरान' पिघले हुए तांबे को कहते हैं। इस तांबे के दोज़खियों के कपड़े होंगे जो सख़्त गर्म आग-जैसे होंगे।

—इब्ने कसीर

मुस्लिम शरीफ़ में आया है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया :

मैयत पर चीख़-पुकार करके रोने वाली औ़रत अगर मौत से पहले तौबा न करेगी तो क़ियामत के दिन इसमें खड़ी की जाएगी कि उसका एक कुर्ता क़तिरान (गंधक[1] या पिघले हुए तांबे) का होगा और खुजली का होगा यानी उसके जिस्म पर ख़ारिश (खुजली) पैदा कर दी जाएगी और ऊपर से क़तिरान लपेट दिया जाएगा। सूरः हज में इर्शाद है :

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ

फ़ल्लज़ी न क फ़ रू क़ुत्तिअ़त लहुम सियाबुम मिन्ननार।

'सो जो लोग काफ़िर थे उनके (पहनने के लिए) आग में कपड़े तराशे जाएंगे।'

दोज़ख़ के दारोग़ों के तअ़ने

तरह-तरह की जिस्मानी तकलीफ़ों और अलग-अलग क़िस्म के अ़ज़ाब के तरीकों के अलावा एक बड़ी रूहानी तकलीफ़ दोज़ख़ियों को यह पहुंचेगी कि दोज़ख़ के दारोग़े उनको तानें देंगे जिसको क़ुरआन हकीम में अलग-अलग अन्दाज़ में ब्यान किया गया है। चुनांचे सूरः अलिफ़-लाम-मीम-सज्दा में इर्शाद है :

---

1. अगर क़तिरान से मुराद गंधक ही है तो गंधक इसलिए न होगी कि खुजली को आराम हो जाए बल्कि इसलिए ताकि जिस्म पर और ज़्यादा जलन हो क्योंकि खुजली में गंधक लगाने से बहुत जलन होती है (वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम)।

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ

व क़ी ल लहुम ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्नारल्लज़ी कुन्तुम बिही तुकज़्ज़िबून।

'और उनसे कहा जाएगा अब चखो इस आग का अ़ज़ाब जिसको तुम झुठलाते थे।'

सूरः अहक़ाफ़ में है :

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا، فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ (احقاف)

अज़् हब्तुम तैयिबातिकुम फ़ी हयातिकुमुद्दुन्या वस्तमतअ़्तुम बिहा। फ़ल यौ म तुज्ज़ौ न अ़ज़ाबल हूनि बिमा कुन्तुम तस्तक्बिरू न फ़िल अर्ज़ि बिग़ैरिल हक्क़ि व बिमा कुन्तुम तफ़्सुक़ून –सूरः अहक़ाफ़

'तुमने दुनिया की ज़िंदगी में अपने मज़े पूरे कर लिए। उन्हें तो हासिल कर चुके (अब ज़रा संभल जाओ, क्योंकि) आज तुम ज़िल्लत के अ़ज़ाब की सज़ा पाओगे, अपनी उस अकड़ के बदले कि तुम ख़्वाह-म-ख़्वाह ज़मीन में बड़े बनते थे और ख़ुदा की नाफ़र्मानी करते थे।'

हज़रत ज़ैद बिन असलम ﷺ फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर ﷺ ने पानी तलब फ़रमाया : चुनांचे आप की ख़िदमत में शहद में मिलाया हुआ पानी पेश किया गया तो आप ने नहीं पिया और फ़रमाया यह है तो बहुत अच्छा मगर नहीं पियूंगा क्योंकि मैं क़ुरआन शरीफ़ में पढ़ता हूं कि अल्लाह तआ़ला ने ख़्वाहिश पर अ़मल करने वालों की निंदा करते हुए फ़रमाया है कि उनसे आख़िरत में कहा जाएगा कि तुमने दुनिया की ज़िंदगी में मज़े उड़ाये इसलिए मैं डरता हूं। कहीं ऐसा न हो कि हमारी नेकी के बदले में दुनिया ही में लज़्ज़तें मिल जाएं। –मिश्कात

(2) दोज़ख़ियों के हालात

दोज़ख़ में जाने वालों की तादाद

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हज़रत आदम عليه السلام को ख़िताब करके फ़रमायेंगे ऐ आदम! वह अर्ज़ करेंगे :

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ

लब्बैक व सअ्दैक वल ख़ैरु कुल्लुहू फ़ी यदैक

यानी, 'में हाज़ीर हूं और हुक्म का ताबेअ् हूं और सारी वेहतरी आप ही के हाथ में है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे (अपनी औलाद में से) दोज़ख़ी निकाल दो। वह अर्ज़ करेंगे : दोज़ख़ी कितने हैं? इर्शाद होगा हर हज़ार में 999 हैं। यह सुनकर औलाद आदम सख़्त परेशान होगी और (रंज व ग़म की वजह से) उस वक़्त बच्चे बूढ़े हो जाएंगे और हामिला औरतों का हमल गिर जायगा और लोग बदहवास हो जाएंगे और हक़ीक़त में बेहोश न होंगे लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख़्त होगा (जिसकी वजह से बदहवासी होगी)।

—मिश्कात

यह सुनकर हज़रत सहाबा رضي الله عنهم ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ﷺ वह एक जन्नती हम में से कौन-कौन होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया कि (घबराओ नहीं) खुश हो जाओ; क्योंकि यह तादाद इस तरह है कि एक तुम में से और हज़ार याजूज माजूज में से हैं।

मतलब यह है कि याजूज माजूज की तादाद बहुत ज़्यादा है, अगर तुम में और उनमें मुक़ाबला हो तो तुम में से एक शख़्स के मुक़ाबले में याजूज-माजूज एक हज़ार आएंगे और चूंकि वे भी आदम ही की नस्ल से हैं, उनको मिलाकर हर फ़ी हज़ार 999 दोज़ख़ में जाएंगे।

दोज़ख़ में ज़्यादा औरतें होंगी

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत में नज़र डाली तो अक्सर बेपैसे वाले देखे और मैंने दोज़ख़ में नज़र डाली तो अक्सर औरतें देखीं।
—मिश्कात

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ एक बार ईद या बक़रईद की नमाज़ के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में औरतों में गुज़र हुआ तो आप ﷺ ने (उनको ख़िताब करके) फ़रमाया ऐ औरतो! सदक़ा किया करो, क्योंकि मैंने दोज़ख़ियों में ज़्यादातर औरतें देखी हैं। औरतों नें अर्ज़ किया, क्यों? आप ﷺ ने फ़रमाया कि लानत[1] बहुत करती हो और शौहर की नाशुक्री करती हो। —बुख़ारी व मुस्लिम

दोज़ख़ियों की बदसूरती

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوْا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۝ مَالَهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ، كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا

वल्लज़ी न क स बुस्सैयिआति जज़ाउ सैयिअतिम बिमिस्लिहा व तर्हक़ुहुम ज़िल्लः। मा लहुम मिनल्लाहि मिन आ़सिम। क अन्न मा उग़्शियत वुजूहुहुम क़ितअ़म मिनल्लैलि मुज़्लिमा। —सूरः यूनुस

'और जिन लोगों ने बुरे काम किये बदी की सज़ा उस बुराई के बराबर मिलेगी और उन पर ज़िल्लत छा जाएगी। उनको अल्लाह (के अ़ज़ाब) से कोई न बचा सकेगा (उनकी बदसूरती का यह हाल होगा कि) गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत के परत लपेट दिये गये हैं।'

---

1. लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूर होना। आपका मतलब यह था कि औरतें चूंकि अक्सर दूसरी औरतों पर लानत करती रहती हैं, इस वजह से वे ख़ुद ही अल्लाह की रहमत से दूर होती रहती हैं और रहमत से दूर होने का मतलब ही दोज़ख़ में जाना है।

इस आयत से मालूम हुआ कि दोज़ख़ियों के चेहरे बेहद स्याह होंगे। हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ ने फ़रमाया : अगर दोज़ख़ियों में से कोई शख़्स दुनिया की तरफ़ निकाल दिया जाए तो उसकी जंगली सूरत के मंज़र और बदबू की वजह से दुनिया वाले ज़रूर मर जाएंगे। इसके बाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ बहुत रोये। —तर्ग़ीब

सूरः मूमिनून में है :

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَٰلِحُونَ۝ (مومنون)

तलफ़हु वुजू ह हुमुन्नारु व हुम फ़ीहा कालिहून। —*मूमिनून*

'आग उनके चेहरों को झुलसाती होगी और उसमें उनके मुहँ बिगड़े होंगे।'

रसूले ख़ुदा ﷺ ने 'कालिहून' की तफ़्सीर फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि दोज़ख़ी को आग जलायेगी जिसकी वजह से उसका ऊपर का होंठ सिकुड़ कर बीच सर तक पहुंच जाएगा और नीचे का होंठ लटक कर नाफ़ तक पहुंच जाएगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़

दोज़ख़ियों के आंसू

हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रात सहाबा ﷺ से फ़रमाया ऐ लोगो! रोओ और रो न सको तो रोने की सूरत बनाओ क्योंकि दोज़ख़ी दोज़ख़ में इतना रोयेंगे कि उनके आंसू उनके चेहरों पर नालियां सी बना देंगे। रोते-रोते आंसू निकलने बंद हो जाएंगे तो ख़ून बहने लगेंगे जिसकी वजह से आँखें ज़ख़्मी हो जाएंगी (मतलब यह कि आंसू और ख़ून की इतनी ज़्यादती होगी कि) अगर उनमें किश्तियां छोड़ दी जाएं तो वे भी चलने लगें। —शर्हुस्सुन्नः

दोज़ख़ियों की ज़ुबान

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, बेशक काफ़िर अपनी ज़ुबान एक फ़र्सख़[1] और दो फ़र्सख़ तक खींच कर बाहर निकाल देगा जिस पर लोग चलकर जाएंगे। —तर्ग़ीब व तर्हीब

दोज़ख़ियों के जिस्म

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया दोज़ख़ में काफ़िर के दोनों मोंढों के दर्मियान का हिस्सा तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बा होगा जबकि कोई तेज़ रफ़्तार सवार चलकर जाए और काफ़िर की दाढ़ उहद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन के रास्ते के बराबर होगी।

—मुस्लिम शरीफ़

तिर्मिज़ी की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया काफ़िर की दाढ़ क़ियामत के दिन उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी रान बैज़ा पहाड़ के बराबर होगी और दोज़ख़ में उसके बैठने की जगह तीन दिन के रास्ते के बराबर लम्बी-चौड़ी होगी जितनी दूर मदीना से रिबज़ा गांव है।

—मिश्कात

और एक रिवायत में है कि दोज़ख़ियों के बैठने की जगह इतनी लम्बी होगी जितनी मक्का और मदीना के दर्मियान का फ़ासला है। —मिश्कात शरीफ़

फ़ायदा : कुछ रिवायतों में है कि काफ़िर की खाल की मोटाई 42 हाथ होगी और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में गुज़र चुका है कि तीन दिन की दूरी के बराबर होगी मगर कोई यह मुश्किल बात नहीं क्योंकि मुख़्तलिफ़ काफ़िरों को मुख़्तलिफ़ सज़ाएं होंगी। किसी को कम, किसी को ज़्यादा।

कुछ रिवायतों में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया मेरी उम्मत के कुछ

---

1. एक फ़र्सख़ तीन मील का होता है। मालूम हुआ कि काफ़िर की ज़ुबान इतनी लम्बी हो जाएगी।

लोग दोज़ख़ में इतने बड़े कर दिए जाएंगे कि एक ही आदमी दोज़ख़ के पूरे एक कोने को भर देगा।

—तर्ग़ीब व़ तर्हीब

हज़रत मुजाहिद (रह०) फ़रमाते हैं कि मुझसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया : क्या तुम जानते हो, दोज़ख़ कितना चौड़ा है? मैंने कहा : नहीं। फ़रमाया, हां! ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा की क़सम!! तुम नहीं जानते, बेशक दोज़ख़ी के कान की लौ और मोंढे के दर्मियान सत्तर साल चलने का रास्ता होगा जिसमें ख़ून और पीप की वादियां (नाले) जारी होंगी। —तर्ग़ीब

पुलसिरात से गुज़र कर दोज़ख़ में गिरना

दोज़ख़ की पीठ पर पुल क़ायम किया जायगा जिसको 'पुलसिरात' कहते हैं। तमाम नेक और बद लोगों को उसपर होकर गुज़रना होगा।

क़ुरआन हकीम में इर्शाद है :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا○ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا○

व इम मिन्कुम इल्ला वारिदुहा। का न अ़ला रब्बि क हत्मम मक़्ज़ीय्या।

—सूरः मरयम

'और तुम में ऐसा कोई भी नहीं, जिसका इस दोज़ख़ पर गुज़र न हो (क़ियामत के दिन)'।

रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ की पीठ पर पुलसिरात क़ायम किया जाएगा और मैं नबियों में सबसे पहले अपनी उम्मत को लेकर उसपर से गुज़रूंगा और उस दिन सिर्फ़ रसूल ही बोलेंगे और उनका कलाम (बोल) सिर्फ़ यह होगा :

अल्लाहुम्म म सल्लिम सल्लिम।

'ऐ अल्लाह! सलामत रख, सलामत रख'।

फिर फ़रमाया कि जहन्नम में सादान[1] के कांटों की तरह मुड़ी हुई कीलें

1. एक कांटेदार पेड़ का नाम है जिसके कांटे बड़े-बड़े होते हैं।

हैं जिन की बड़ाई अल्लाह ही को मालूम है। वे कीलें पुलसिरात पर चलने वालों को बद-आ'मालियों की वजह से घसीट कर दोज़ख़ में गिराने की कोशिश करेंगी, जिसके नतीजे में कुछ हलाक होकर (दोज़ख़ में) गिर जाएंगे (और कभी भी न निकल सकेंगे, ये काफ़िर होंगे) और कुछ कट-कटाकर दोज़ख़ में गिरेंगे और फिर निजात पा जाएंगे (यह फ़ासिक़ होंगे)।

दूसरी रिवायत में है कि कुछ मोमिन पलक झपकते में गुज़र जाएंगे और कुछ बिजली की तरह जल्दी से गुज़र जाएंगे। और कुछ हवा की तरह और कुछ तेज़ घोड़ों और ऊंटों की तरह। इन रफ़्तारों में कुछ सलामती के साथ निजात पा जाएंगे और कुछ (कीलों से) छिल-छिलाकर छूट जाएंगे और कुछ दोज़ख़ में औंधे धकेल दिए जाएंगे। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत कअ़्ब ﷺ फ़रमाते थे कि जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा लेगा। जब सब नेक व बद जमा हो जाएंगे तो अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होगा कि तू अपनों को पकड़ ले, जन्नतियों को छोड़ दे। चुनांचे जहन्नम बुरों को निवाला कर जाएगा जिनको वह इस तरह पहचानता होगा जैसे तुम अपनी औलाद को पहचानते हो बल्कि उससे भी ज़्यादा।

—इब्ने कसीर

हासिल[1] यह है कि जन्नत वाले पार होकर जन्नत में पहुंच जाएंगे जिनके लिए जन्नत के दरवाज़े पहले से खुले हुए होंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में झोंक दिए जाएंगे जिसको अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने यह ब्यान फ़रमाया है :

ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا

सुम्म म नुनज्जिल्लज़ी नत्तक़ौ व न ज़ रुज़्ज़ालिमी न फ़ीहा जिसीय्या। *—सूरः मरयम*

'फिर हम उनको निजात देंगे जो डरा करते थे और ज़ालिमों को उस (दोज़ख़) में ऐसी हालत में रहने देंगे कि घुटनों के बल गिर पड़ेंगे।'

1. खुलासा, सार

दाख़िले की सूरत

क़ुरआन शरीफ़ की आयतों में दोज़ख़ियों के दाख़िले की सूरत कई जगह ब्यान की गयी हैं जिनमें यह भी है कि दोज़ख़ी प्यास की हालत में जहन्नम रसीद किये जाएंगे और दोज़ख़ में जाने से पहले दरवाज़े पर खड़ा करके उनसे फरिश्ते सवाल व जवाब भी करेंगे। नीचे की आयतों से ये मज़्मून ख़ूब साफ़ समझ में आते हैं :

وَنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا

व नसूक़ुल मुज्रिमी न इला जहन्न न म विर्दा —*सूरः मरयम*

'और हम मुज्रिमों को [illegible]ज़ख़ की तरफ़ प्यासा हांकेंगे।'

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ

यौ म युस्हबू न फ़िन्नारि अला वुजूहिहिम ज़ूक़ू मस्स स सक़र।
—*सूरः क़मर*

'[illegible] मुंह के बल जहन्नम में घसीटें जाएंगे, तो उनसे [illegible] कि दोज़ख़ की आग का मज़ा चखो।'

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ

फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम वल् ग़ाऊन। व जुनूदु इब्ली स अज्मऊन ।
—*सूरः शुअ़रा*

'फिर वे और गुमराह लोग और इबलीस का लश्कर सबके सब दोज़ख़ में औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे।'

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِىْ وَالْاَقْدَامِ

युअ़्रफ़ुल मुज्रिमू न बिसीमाहुम फ़ युअ़्ख़ज़ु बिन्नवासी वल्

अक़्दाम। *—सूरः रहमान*

'मुज्रिम लोग अपने हुलिए से पहचाने जाएंगे। (क्योंकि उनके चेहरे स्याह और आखें नीली होंगी), फिर उनके सर के बाल और पांव पकड़ लिए जाएंगे (और उनको घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जायेगा)।'

तर्ग़ीब व तर्हीब में हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ का क़ौल इस आयत की तफ़सीर में नक़ल किया गया है कि मुज्रिम के हाथ और पैर मोड़कर इकट्ठे कर दिए जऐंगे। फिर लकड़ियों की तरह तोड़-मरोड़ दिया जाएगा (और जहन्नम में झोंक दिया जाएगा)।

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ مَالَكُمْ لَاتَنَاصَرُوْنَ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝

उह्शुरुल्लजी न ज़ ल मू व अज़्वा जहुम वमा कानू यअ़्बुदून। मिन दूनिल्लहि फ़हदूहुम इला सिरातिल जहीम। व क़िफ़ूहुम इन्ननहुम मस्उलून। मा लकुम ला तना सरून। बल हुमुल यौ म मस्तस्लिमून। *—साफ़्फ़ात*

'(फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) जमा कर लो ज़ालिमों को और उनके जोड़ों को और उनके माबूदों को, जिनको वे लोग ख़ुदा को छोड़कर पूजा करते थे, फिर इन सबको दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ। (और फिर हुक्म होगा अच्छा ज़रा) ठहराओ, उनसे सवाल किया जाएगा (चुनांचे यह सवाल होगा) कि अब तुम को क्या हुआ, एक दूसरे की मदद नहीं करते। (इस पर भी वे एक दूसरे की कुछ मदद न करेंगे) बल्कि सब के सब सर झुकाये खड़े रहेंगे।'

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝ (احزاب)

यौ म तुक़ल्लबु वुजू हुहुम फ़िन्नारि यक़ूलू न यालैतना अ तअ्-नल्ला ह व अ तअ्नर्रसूला। —सूरः अहज़ाब

'जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में उलट-पलट किये जाएंगे, वे यों कहते होंगे ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअ़त की होती और हमने रसूल की इताअ़त की होती।'

दोज़ख़ वालों से शैतान का ख़िताब

इधर तो दोज़ख़ी शैतान पर पछताते होंगे और अल्लाह की ओर से ऊपर के ख़िताब के ज़रिये उन पर डांट पड़ेगी। उधर शैतान इस तक़रीर से उनको लताड़ेगा :

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ
وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ
دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ مَآاَنَا
بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ
قَبْلُ ۝ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ؕ (ابراهيم)

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल अम्रु इन्नल्ला ह व अ़ द कुम वअ़्दल हक़्क़ि व वअ़त्तुकुम फ़ अख़्लफ़्तुकुम। वमा का न लि य अ़लैकुम मिन सुल्तानिन इल्ला अन् दअ़ौतुकुम फ़स्तजब्तुम ली फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम। मा अना बिमुस्रिख़िकुम व मा अन्तुम बिमुस्रिख़ी य। इन्नी कफ़र्तु बिमा अशरक्तुमूनि मिन क़ब्ल। इन्नज़्ज़ालिमी न लहुम अ़ज़ाबुन अलीम। —सूरः इब्राहीम

'और (क़ियामत के दिन) जब सब मुक़दमे फ़ैसला हो चुकेंगे तो शैतान कहेगा (मुझे बुरा-भला कहना नाहक़ है, क्योंकि) बिला शुब्हा अल्लाह ने तुमसे सच्चे वायदे किये थे और मैंने भी कुछ वादे किये थे सो मैंने वे वादे ख़िलाफ़ किये थे और तुम पर मेरा इससे ज़्यादा ज़ोर न चलता था कि मैंने

तुमको (गुमराही की) दावत दी। सो तुमने (ख़ुद ही) मेरा कहना मान लिया। तुम मुझ पर मलामत मत करो और अपने आप को मलामत करो। न मैं तुम्हारा मददगार हूं और न तुम मेरे मददगार हो। मैं तुम्हारे इस काम से ख़ुद बेज़ार हूं कि तुम इससे पहले (दुनिया में) मुझे (ख़ुदा का) शरीक क़रार देते थे। यक़ीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।'

दोज़ख़ियों को वाक़ई बड़ी हसरत होगी जबकि शैतान अपना अलगाव ज़ाहिर करेगा और हर क़िस्म की मदद और तसल्ली से अलग हो जाएगा। उस वक़्त दोज़ख़ियों के ग़ुस्से की जो हालत होगी, ज़ाहिर है।

गुमराह करने वालों पर दोज़ख़ियों का ग़ुस्सा

जो लोग गुमराह करने वाले थे उन पर दोज़ख़ियों को गुस्सा आयेगा और उनसे कहेंगे :

اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ

(ابراهيم)

इन्ना कुन्ना लकुम त ब अ़न फ़हल अन्तुम मुग्नू न अ़न्ना मिन अ़ज़ाबिल्लाहि मिन शैई। —इब्राहीम

'हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम ख़ुदा के अ़ज़ाब का कुछ हिस्सा हम से हटा सकते हो?'

वे जवाब देंगे :

لَوْ هَدٰنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَالَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ○

(ابراهيم)

लौ हदानल्लाहु ल हदैनाकुम सवाउन अ़लैना अ ज ज़िअ़्ना अम सबर्ना मा लना मिम् महीस। —इब्राहीम

'(तुम्हें क्या बचाएं हम तो ख़ुद ही नहीं बच सकते) अगर अल्लाह हमको बचने की कोई राह बताता तो तुमको भी वह राह बता देते। हम

सबके हक़ में दोनों शक्लें बराबर हैं। चाहे हम परेशान हों, चाहे ज़ब्त करें। हमारे बचने की कोई शक्ल नहीं।'

वह लोग ग़ुस्से और जलन से भर कर गुमराह करने वालों के बारे में अल्लाह के दरबार में अ़र्ज़ करेंगे। सूरः हामीम सज्दा में है :

رَبَّنَا اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ

रब्बना अरिनाल्लज़ै नि अज़ल्ललाना मिनल जिन्नि वल इंसि नज्-अ़लहुमा तह् त अक्दामिना लियकूना मिनल अस्फ़लीन।

'ऐ हमारे परवरदिगार! हमें वह शैतान और इंसान दिखा दे जिन्होंने हमें गुमराह किया; हम उनके पैरों के नीचे कुचल डालेंगे ताकि वे ख़ूब ज़लील हों'

दोज़ख़ के दारोग़ों और मालिक से अ़र्ज़-मारूज़

दोज़ख़ी अ़ज़ाब से परेशान होकर अ़र्ज़-मारूज़ का सिलसिला शुरू करेंगे कि :

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ (مومن)

उद्ऊ रब्बकुम युख़फ़्फ़िफ़ अ़न्ना यौमम मिनल अ़ज़ाब।

—सूरः मोमिन

'तुम ही अपने पालनहार से दुआ़ करो कि एक दिन तो हम से अ़ज़ाब हल्का कर दे।'

वे जवाब देंगे :

اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ (مومن)

अ व लम तकु तअ्तीकुम रुसुलुकुम बिलबैयिनात।

—सूरः मोमिन

'क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मुअ्जिज़े लेकर नहीं आते रहे थे (और दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा नहीं बतलाया था?)

इसपर दोज़ख़ी जवाब देंगे कि *'बला'* यानी 'हाँ' आते तो थे लेकिन हमने उनका कहना न माना। फ़रिश्ते जवाब में कहेंगे :

فَادْعُوْا وَمَادُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ (مومن)

फ़द्ऊ व मा दुआउल काफ़िरी न इल्ला फ़ी ज़लाल। (सूरः मोमिन)

'तो फिर (हम तुम्हारे लिए नहीं कर सकते तुम ही दुआ कर लो और वह भी बेनतीजा होगी) क्योंकि काफ़िरों की दुआ (आख़िरत में) बिल्कुल बेअसर है।'

इसके बाद मालिक यानी दोज़ख़ के अफ़्सर के दरबार में दर्ख़्वास्त पेश करके कहेंगे :

يٰمَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ

या मालिकु लियक़्ज़ि अलैना रब्बुक।

यानी ऐ मालिक! (तुम ही दुआ करो कि) तुम्हारा परवरदिगार (हमको मौत देकर) हमारा काम तमाम कर दे।'

वे जवाब देंगे :

اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ

इन्ननकुम माकिसून।

'तुम हमेशा इस हाल में रहोगे (न निकलोगे, न मरोगे)।

हज़रत आ'मश (रह०) फ़रमाते थे कि मुझे रिवायत पहुंची है कि मालिक (अलै०) के जवाब और दोज़ख़ियों की दर्ख़्वास्त में हज़ार वर्ष की मुद्दत का फ़ासला होगा।

इसके बाद कहेंगे कि आओ अपने रब से सीधे-सीधे दर्ख़्वास्त करें

और उससे दुआ करें क्योंकि उससे बढ़कर कोई नहीं है। चुनाचें अर्ज़ करेंगे:

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّيْنَ، رَبَّنَا اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ (مومنون)

रब्बना ग़ ल बत अ़लैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन ज़ाल्लीन। रब्बना अख़्रिज्ना फ़इन्उद्ना फ़ इन्ना ज़ालिमून। —सूरः मोमिनून

‘ऐ हमारे रब! (वाक़ई) हमारी बदबख़्ती ने हमको घेर लिया था और हम गुमराह हो गये थे। ऐ हमारे रब! हमको इससे निकाल दीजिए फिर हम अगर दोबारा (ऐसा) करें तो हम बेशक क़ुसूरवार हैं।

अल्लाह तआ़ला जवाब में फ़रमायेंगे :

इख़्सऊ फ़ीहा वला तुकल्लिमून।

‘इसी में फिटकारे हुए पड़े रहो और मुझसे बात न करो।’

हज़रत अबूदर्दा ﷺ फ़रमाते थे कि अल्लाह जल्ल ल शानुहु के इस इर्शाद पर हर क़िस्म की भलाई से नाउम्मीद हो जाएंगे और गधों की तरह चीख़ने-चिल्लाने और हसरत व दुख़ में लग जाएंगे। —मिश्कात शरीफ़

इब्ने कसीर में है कि उनके चेहरे बदल जाएंगे; शक्लें बिगड़ जाएंगी; यहां तक कि कुछ मोमिन शिफ़ाअ़त लेकर आयेंगे लेकिन दोज़ख़ियों में से किसी को पहचानेंगे नहीं। दोज़ख़ी उनको देखकर कहेंगे कि मैं फ़्लां हूं मगर वे कहेंगे कि ग़लत कहते हो हम तुमको नहीं पहचानते। ‘इख़्सऊ फ़ीहा’ के जवाब के बाद दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिए जाएंगे और वे उसी में सड़ते रहेंगे।

दोज़ख़ियों की चीख़-पुकार

सूरः हूद में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है :

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ، خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

फ़ अम्मल्लज़ी न शक़ू फ़ फ़िन्नारि लहुम फ़ीहा ज़फ़ीरुं व शहीक़ुन ख़ालिदी न फ़ीहा।

'जो लोग शक़ी (बदबख़्त) हैं वे दोज़ख़ में इस हाल में होंगे कि गधों की तरह चिल्लाते होंगे।'

क़ामूस में है कि 'जफ़ीर' गधे की आवाज़ को कहते हैं और 'शहीक़' उसकी आख़िरी आवाज़ को कहते हैं।

दोज़ख़ के अ़ज़ाब से छुटकारे के लिए फ़िद्या देना गवारा होगा

अल्लाह जल्ल ल शानुहू का इर्शाद है :

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَافِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ (زمر)

व लौ अन्न न लिल्लज़ी न ज़ ल मू मा फ़िल अर्ज़ि जमीऔं व मिस्लहू म अ़ हू लफ़्तदौ बिही मिन सूइल् अ़ज़ाबि यौमल क़ियामः ।

'और अगर ज़ुल्म (यानी शिर्क व कुफ़्र) करने वालों के पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और इन चीजों के साथ और भी इतनी चीज़ें हों तो लोग क़ियामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब से छूट जाने के लिए (बेझिझक) उन सबको देने लगें।'

सूरः मआ़रिज में इर्शाद है कि 'उस दिन मुज्रिम यह तमन्ना करेगा कि आज के अ़ज़ाब से छूट जाने के लिए अपने बेटों को और अपनी बीवी को और भाई को और कुन्बे को जिनमें वह रहता था और तमाम ज़मीन की चीजों को अपने बदले में दे दे और फिर यह बदला उसको बचा ले।'

लेकिन वहां न तो माल होगा; न कोई किसी के बदले में आना मंज़ूर करेगा और मान लो, ऐसा हो भी जाए, तो मंज़ूर न किया जाएगा। जैसा कि सूरः माईदा में ज़िक्र है :

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَاتُقُبِّلَ مِنْهُمْ، وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ۔

इन्नल्लज़ी न क फ़ रू लौ अन्न न लहुम मा फ़िल अर्ज़ि जमी औं

व मिस्लहू म अ़ हू लियफ़्तदू बिही मिन अ़ज़ाबि यौमिल क़ियामति मा तुक़ुब्बि ल मिन्हुम। व लहुम अ़ज़ाबुन अलीम।

'यक़ीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया की चीज़ें हों और उतनी चीज़ों के साथ उतनी ही चीज़ें और भी हों ताकि वे उनको देकर क़ियामत के दिन अ़ज़ाब से छूट जाएं तब भी वे चीज़ें उनसे हरगिज़ क़ुबूल न की जाएंगी और उनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।'

जन्नतियों का हँसना

क़ुरआन हकीम में फ़रमाया गया है कि जन्नती दोज़ख़ियों के हाल पर हंसेंगे। सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन में है :

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ، عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ

फ़ल यौ मल्लज़ी न आ मनू मिनल कुफ़्फ़ारि यज़्हकून। अ़लल अराइकि यन्ज़ुरून।

'आज ईमान वाले काफ़िरों पर हंसते होंगे, मुसहरियों पर बैठ उनका हाल देख रहे होंगे।'

तफ़सीर दुर्रे मंसूर में हज़रत क़तादा (रजि०) से रिवायत है कि जन्नत में कुछ दरीचे और झरोखे ऐसे होंगे जिनसे जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को देख सकेंगे और उनका बुरा हाल देखकर 'बदले के तौर पर' उन पर हंसेंगे जैसा कि दुनिया में मोमिनों को देखकर खुदा के मुज्रिम हँसते थे और कनखियों के इशारों से उनका मज़ाक़ उड़ाते थे और घरों में बैठकर भी दिल्लगी के तौर पर ईमान वालों का ज़िक्र करते थे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ

इन्नलल्लज़ी न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी न आमनू यज़्हकून [1]

1. अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने फरमाया : 'बेशक मुज्रिम मोमिनों का मज़ाक उड़ाया करते थे।'

सूरः मुअ्मिनून में है कि दोज़ख़ियों से अल्लाह तआ़ला शानुहू का इर्शाद होगा कि मेरे बंदों में एक गिरोह (ईमान वालों का) था जो (हम से) अ़र्ज़ किया करते थे कि, 'हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आये सो हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहमत फ़रमाइए और आप सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाले हैं।' तुमने उनका मज़ाक़ बना रखा था और यहां तक तुम उनका मज़ाक़ बनाने में मश्ग़ूल रहे कि उनके मश्ग़ले ने तुमको मेरी याद भी भुला दी। आज मैंने उनको उनके सब्र का बदला यह दिया कि वही कामयाब हुए।

सोचने की बात

दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात अब तक आपने पढ़े हैं। यह इसलिए नहीं लिखे गये कि सरसरी नज़र से पढ़कर किताब अलमारी के सुपुर्द कर दी जाए और दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात को पढ़कर दूसरे क़िस्सों और कहानियों की तरह भुला दिया जाए।

हक़ीक़त यह है कि पिछले वाकिए और हालात जो ब्यान किए गये हैं चूंकि क़ुरआन की आयतों और नबी ﷺ की हदीसों का तर्जुमा है इसलिए बिला शक सही और वाक़ई हैं। अगर इनको बार-बार पढ़ा जाए और अपनी बद-आ'मालियों पर नज़र डाली जाए तो सख़्त दिल वाला इंसान भी अपनी ज़िंदगी को बहुत आसानी से पलट सकता है और अपने नफ़्स को दोज़ख़ के हालात समझाकर नेकियों के रास्ते पर डाल सकता है। बशर्ते कि अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को सच्चा समझता हो और उनके बताये हुए दोज़ख़ के हालात को सही और वाक़ई मानता हो। मोमिन बंदे हमेशा अपनी ज़िंदगी का हिसाब करते रहते हैं और अल्लाह तआ़ला शानुहू के दरबार में दोज़ख़ से पनाह में रहने की दुआ़ करते रहते हैं भला हो सकता है कि जो शख़्स इन हालात को सही समझता हो, वह अपनी ज़िंदगी को दुनिया की लज़्ज़तों और फ़िना हो जाने वाली इज़्ज़त और दौलत के हासिल करने में गंवा दे। रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि दोज़ख़ लज़्ज़तों में छिपा है, जन्नत नागवारियों में छुपा दी गई है। —बुख़ारी व मुस्लिम

यानी लज़्ज़तों में पड़कर ज़िंदगी गुज़ारने वाले वे काम कर रहे हैं जिनके पर्दे में दोज़ख़ है और नफ़्स को नागवारियों में फंसाकर अच्छे अ़मल करने वाले वह काम कर रहे हैं जिनके पर्दे में जन्नत है। आह! उन लोगों को जहन्नम के हालात का पता ही नहीं जो .ख़ुदकुशी करके यह समझते हैं कि मुसीबत से छुटकारा हो जाएगा और जो दुनिया की सख़्ती और मश्क़्क़त से घबराकर यों कह देते हैं क्या ख़ुदा के यहां मेरे लिए दोज़ख़ में भी जगह नहीं है।

हक़ीक़त यह है कि अगर दोज़ख़ की आग, उनके बिच्छू, आग के कपड़े, अ़ज़ाब के तरीक़े, दोज़ख़ की ख़ुराक वग़ैरह का ध्यान रहे तो म्युनिसिपैलिटी और एसंबलियों की क़ुर्सियों के एज़ाज़ हासिल करने वाले, रुपया जमा करने और बिल्डिंग व जायदाद बनाने वाले हरगिज़-हरगिज़ उन चीजों में पड़कर और बड़े-बड़े गुनाहों में मुब्तला होकर अपनी आख़रत ख़राब नहीं कर सकते।

भला जिसे दोज़ख़ की भूख की ख़बर हो, वह रोज़ा छोड़ा सकता है? और दोज़ख़ की बेचैनी को जानता हो, वह ज़रा-सी नींद और फ़ानी आराम के लिए नमाज़ बर्बाद कर सकता है? और जो दोज़ख़ के सांप, बिच्छुओं के डसने की जलन की ख़बर रखता हो, वह यों कह सकता है कि दाढ़ी रख़ने से खुजली होती है? जिन्हें 'जुब्बुल हुज़्न' की ख़बर हो, वे दिखावे की इबादत कैसे कर सकते हैं और जिसको तस्वीर बनाने का अंजाम मालूम हो, वे तस्वीर बना सकते हैं? जिनको यह यक़ीन हो कि शराब पीने की सज़ा में दोज़ख़ियों के जिस्मों का धोवन या निचोड़ पीना पड़ेगा, वे शराब के पास जा सकते हैं? हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं।

हक़ीकत यह है कि जन्नत और दोज़ख़ के हालात सिर्फ़ ज़ुबानों तक ही महदूद (सीमित) रह गये हैं और यक़ीन के दर्जे में नहीं रहे, वरन् बड़े गुनाह तो दूर की बात, छोटे गुनाहों के पास जाना भी सोचा नहीं जा सकता। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्ह फ़रमाते थे कि अगर जन्नत और दोज़ख़ मेरे सामने रख दिए जाएं तो मेरे यक़ीन में ज़रा-भी बढ़ोतरी नहीं होगी यानी मेरा

ग़ैब पर ईमान इतना मज़बूत है कि आंखों से देखकर भी उतना ही मेरा यक़ीन हो सकता है जितना बग़ैर देखे है। जिनको दोज़ख़ के हालात की ख़बर हो, वे गुनाह तो क्या करते इस दुनिया में न हँसते, न ख़ुशी मनाते।

अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब में एक रिवायत नक़ल की है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रत जिब्रील عليه السلام से दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या बात है, मैंने मीकाईल को हँसते हुए नहीं देखा? अ़र्ज़ किया---- जबसे दोज़ख़ की पैदाइश हुई है, मीकाईल नहीं हँसे।

सही मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने एक मर्तबा, इर्शाद फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुमने वह मंज़र देखा होता जो मैंने देखा है, तो तुम ज़रूर कम हँसते और ज़्यादा रोते! सहाबा رضی اللہ عنہم ने अ़र्ज़ किया, आपने क्या देखा? इर्शाद फ़रमाया मैंने जन्नत और दोज़ख़ देखे।

हज़रत इब्ने मस्ऊद رضی اللہ عنہ फ़रमाते थे मुझे तअ़ज्जुब है कि लोग हँसते हैं, हालांकि उनको दोज़ख़ से बचने का यक़ीन नहीं है। हज़रत अबू सईद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ एक बार (मकान से) बाहर तशरीफ़ लाये और देखा कि लोग खिलखिला कर हँस रहे हैं। यह देखकर आप ﷺ ने फ़रमाया कि अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली चीज़ (यानि मौत) को कसरत से याद करते तो तुम्हें इसकी फ़ुर्सत नहीं मिलती; जिस हाल में तुमको देख रहा हूँ।

—मिश्कात शरीफ़

ग़रज़ यह कि होशियार वही है, जो अपनी आख़िरत की ज़िंदगी बनाये और दो-चार दिनों के माल व दौलत, इज़्ज़त व आबरू, ओहदा व हुकूमत के फंदों में पड़कर अपनी जान को दोज़ख़ के हवाले न करे, जब अ़ज़ाब में फंसेगा तो पछताने और

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ مَاۤ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ، هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ

(الحاقة)

या लै तहा कानतिल क़ाज़ियः मा अग़्ना मालियः ह ल क अन्नी सुल्तानियः।

—अल-हाक़्क़ः

'हाय काश! वह मौत ही ख़त्म कर देती, मेरे काम कुछ न आया मेरा माल, जाती रही मेरी हुकूमत। कहने और हाथ मलने से कुछ हासिल न होगा। जन्नत-जैसी आराम की जगह की तलब से लापरवाही और दोज़ख़ जैसे बेमिसाल अज़ाब के घर से बचने की चिंता से ग़फ़लत बेअक़्लों ही का काम हो सकता है कि रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया है कि जन्नत को तलब करो जितना तुमसे हो सके और दोज़ख़ से भागो जितना तुमसे हो सके। क्योंकि जन्नत का तलबगार और दोज़ख़ से भागने वाला (लापरवाही की नींद) सो नहीं सकता।

—अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

हज़रत यह्या बिन मुंकदिर जब रोते थे तो आंसूओं को अपने मुंह और दाढ़ी से पोंछते थे और इसकी वजह यह बताते थे कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि उसे जगह जहन्नम की आग न पहुंचेगी जहां आंसू पहुंचे होंगे।

एक अंसारी ने तहज्जुद की नमाज पढ़ी और बैठकर बहुत रोये और कहते रहे कि जहन्नम की आग के बारे में अल्लाह ही से फ़रियाद करता हूँ। उनका हाल देखकर रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया कि आज तुमने फ़रिशतों को रुला दिया।

हज़रत ज़ैनुलआ़बिदीन رضي الله عنه एक मर्तबा नमाज़ पढ़ रहे थे कि घर में आग लग गई, मगर आप नमाज़ में मश्ग़ूल रहे। लोगों ने पूछा कि आपको ख़बर न हुई? फ़रमाया कि दुनिया की आग से आख़िरत की आग ने ग़ाफ़िल रखा।

एक साहब का क़िस्सा है कि रात को सोने के लिए बिस्तर पर जाते और सोने की कोशिश करते, मगर नींद न आती थी इसलिए उठकर नमाज़ शुरू कर देते थे और अल्लाह के दरबार में अ़र्ज़ करते थे कि ऐ अल्लाह! आपको मालूम है कि जहन्नम की आग के ख़ौफ़ ने मेरी नींद उड़ा दी। फिर सुबह तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहते।

हज़रत अबू यज़ीद (रह०) हर वक़्त रोते रहते थे। इसकी वजह पूछी गई तो फ़रमाया कि अगर खुदा का यों इर्शाद हो कि गुनाह करोगे तो हमेशा के लिए हम्माम (ग़ुस्लख़ाना) में क़ैद किये जाओगे तो उसके डर से मेरे आंसू हरगिज़ न रुकेंगे। फिर जबकि गुनाह करने पर दोज़ख़ से डराया जिसकी आग तीन हज़ार साल तक गर्म की गयी है तो मेरे आंसू कैसे रुकें?

फ़अ्तबिरू या उलिल अब्सार।

ख़ातमा

दोज़ख़ से बचने की कुछ दुआयें

1. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि आँहज़रत ﷺ जिस तरह सहाबा को क़ुरआन की सूरः सिखाते थे, उसी तरह यह दुआ़ सिखाते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ (ترغیب عن مسلم)

अल्लाहुम्म म इन्नी अऊज़ुबि क मिन अ़ज़ाबि जहन्नम व अऊ ज़ुबि क मिन अ़ज़ाबिल क़ब्रि व अऊज़ुबि क मिन फ़ित्नतिल मसीहिद्दज्जालि व अऊज़ुबि क मिन फ़ित्नतिल मह्या वल ममात।

2. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ अकसर यह दुआ़ फ़रमाते थे :

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(بخاری)

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह स न तौं व फ़िल आख़िरति ह स न तौं व क़िना अ़ज़ाबन्नार। *—बुख़ारी*

3. हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ ने एक सहाबी 'मुस्लिम' को बतलाया था कि मग़्रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म म·अजिर्नी मिनन्नार

कहा करो। अगर इसको कह लोगे और उसी रात मर जाओगे तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी कर दी जाएगी और जब सुबह को नमाज़ पढ़ चुको और उसको इसी तरह (सात मर्तबा किसी से बोलने से पहले) कह लोगे और उसी दिन मर जाओगे तो दोज़ख़ से तुम्हारी ख़लासी ज़रूर कर दी जाएगी।

—अबूदाऊद शरीफ़

4. रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया है जो शख़्स तीन बार खुदा से जन्नत का सवाल करे तो जन्नत उसके लिए खुदा से दुआ़ करती है कि

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ

अल्लाहुम्म म अद्ख़िलहुल जन्न:

'ऐ अल्लाह! इसको जन्नत में दाख़िल कर के।'

और जो आदमी तीन बार दोज़ख़ से पनाह चाहे तो दोज़ख़ उसके लिए खुदा से दुआ़ करती है कि—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْهُ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म म अजिर्हु मिनन्नार

'ऐ अल्लाह! इसको दोज़ख़ से बचा।

—तर्ग़ीब

आख़िरी बात

अब मैं इस रिसाले को ख़त्म करता हूँ। सबक़ लेने वाली आँख रखने वालों के लिए थोड़ी भी बहुत है और ग़ाफ़िलों के लिए बड़-बड़े दफ़्तर भी कुछ नहीं।

पढ़ने वालों से दर्ख़्वास्त है कि मुहताज व मिस्कीन के हक़ मे दुआ फ़रमायें कि अल्लाह अपनी रहमत से दुनिया व आख़िरत के तमाम अ़ज़ाबों और तकलीफ़ों से बचाये रखें और जन्नतुल फ़िर्दौस नसीब फ़रमायें।

मेरे वालिद मोहतरम सूफ़ी मुहम्मद सिद्दीक़ साहब ज़ैद मजदहुम को भी दुआ़-ए-ख़ैर से याद फ़रमायें जिनकी कोशिश से मैं क़ुरआन करीम की आयतें जमा करने और नबी ﷺ की हदीसों को चुनने के लायक़ हुआ।

جَزَاهُ اللّٰهُ عَنِّیْ جَزَاء خیر فی هٰذه الدار وفی تلك الدار واحشرنی
وایاه مع المتقین الابرار۔ آمین

जज़ाहुल्लाहु अ़न्नी जज़ाअ् ख़ैरिन फ़ी हाज़िहिद्दारि व फ़ी तिल्कद्-दारि वहशुर्नी व इय्याहु मअ़ल मुत्तक़ीनल अब्रार। (आमीन)

واخرِ دعوانا ان الحمد للّٰهِ رب العالمین والصلوة والسلام علی
خلقه سیدنا محمدن الشفیع الامة یوم الدین وعلیٰ اٰله وصحبه
هداة الدین المتین

व आख़िरुदअ़्वाना अनिलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला ख़ल्क़िहि सैयिदिना मुहम्मदि-निश्शफ़िइल उम्मति यौमिद्दीन व अ़ला आलिही व सह्बिही हुदातद्दीनिल मतीन।

जो इन्सान किसी ख़तरे किसी आफ़त को पहले मालूम व महसूस कर ले और फिर उस से बचने की कोशिश न करे वह इन्सान नहीं जानवर है, बल्कि कुरआन मजीद के अल्फ़ाज में जानवर से भी बदतर।

हमें अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद के ज़रिए और अपने पाक और सच्चे रसूल के जरिए बार-बार खोल खोल के बता दिया है कि फलां गुनाह की यह सज़ा है और दुनिया व आख़िरत में यह पकड़ है।

यह छोटी सी किताब आप को बहुत से गुनाह की सज़ा के बारे में और खुदा के दुश्मनों के ठिकाने ''जहन्नम'' के बारे में कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ के हवालों से ज़रुरी बातें बतायेगी।

ISBN 81-7101-479-8 www.idara.co
9 788171 014798 ₹ 35000